नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 178
दि. 02.04.2026,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

ईरान में सत्ता का केंद्र बदला? IRGC के बढ़ते प्रभाव से 'छाया शासन' की आशंका, सरकार बेबस दिखी

तेहरान। पश्चिम एशिया में जारी तनाव के बीच ईरान के भीतर सत्ता संतुलन को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। ताजा रिपोर्टों में दावा किया जा रहा है कि देश की सबसे ताकतवर सैन्य संस्था इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स अब केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं रह गई, बल्कि उसने शासन के कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर सीधा नियंत्रण स्थापित कर लिया है। इन दावों के बीच निर्वाचित सरकार और सैन्य ढांचे के बीच टकराव की खबरें सामने आ रही हैं, जिसने स्थिति को 'तख्तापलट जैसी' बना दिया है। रिपोर्ट्स के अनुसार, ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान और IRGC के शीर्ष नेतृत्व के बीच मतभेद अब चरम पर पहुंच चुके हैं। कहा जा रहा है कि राष्ट्रपति अपनी ही सरकार में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र नहीं रह गए हैं। हालात इतने गंभीर बताए जा रहे हैं कि उन्हें देश के सर्वोच्च नेतृत्व से मिलने तक से रोका जा रहा है। यह स्थिति किसी भी लोकतांत्रिक ढांचे के लिए बेहद असामान्य मानी जाती है और यह संकेत देती है कि वास्तविक शक्ति का केंद्र कहीं और खिसक चुका है।

ईरान की सत्ता संरचना में सर्वोच्च स्थान पर रहने वाले मुजतबा खामेनेई को लेकर भी अनिश्चितता बनी हुई है। बताया जा रहा है कि वे सार्वजनिक रूप से दिखाई नहीं दे रहे हैं और उनके नाम से जारी संदेश केवल आधिकारिक माध्यमों से प्रसारित हो रहे हैं। इससे यह सवाल और गहरा गया है कि देश की बागडोर वास्तव में किसके हाथ में है। कुछ अंतरराष्ट्रीय बयानों, जिनमें डोनाल्ड ट्रंप के दावे भी शामिल हैं, ने इस रहस्य को और बढ़ा दिया है, हालांकि ईरान ने इन दावों को सिरे से खारिज किया है।

सूत्रों के मुताबिक, हाल ही में राष्ट्रपति पजशकियान ने एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक नियुक्ति का प्रयास किया था, लेकिन IRGC के प्रभावशाली अधिकारियों ने उसे रोक दिया। इससे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि अब संवेदनशील फैसलों पर अंतिम मुहर निर्वाचित सरकार की नहीं, बल्कि सैन्य तंत्र की लग रही है। रिपोर्टों में यह भी कहा गया है कि IRGC के वरिष्ठ अधिकारियों की एक 'मिलिट्री काउंसिल' रोजमर्रा के प्रशासनिक कामकाज पर नजर रख रही है और कई मामलों में सीधे हस्तक्षेप कर रही है।

ईरान में यह स्थिति नई नहीं है, लेकिन मौजूदा हालात इसे अधिक जटिल बना रहे हैं। 1979 की इस्लामिक क्रांति के बाद स्थापित IRGC को मूल रूप से देश की सुरक्षा और बाहरी खतरों से रक्षा के लिए बनाया गया था, लेकिन समय के साथ इसका प्रभाव लगातार बढ़ता गया। आज यह केवल एक सैन्य संस्था नहीं, बल्कि तेल, बैंकिंग, निर्माण और व्यापार जैसे कई अहम क्षेत्रों में भी अपनी मजबूत पकड़ बना चुकी है। ऐसे में जब राजनीतिक नेतृत्व कमजोर दिखाई देता है, तो IRGC का प्रभाव स्वतः ही और अधिक बढ़ जाता है।

इस सत्ता संघर्ष का असर केवल राजनीतिक ढांचे तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका सीधा प्रभाव देश की अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर भी पड़ रहा है। विशेष रूप से होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर बढ़ते नियंत्रण ने वैश्विक चिंता को और गहरा कर दिया है। यह मार्ग दुनिया की तेल आपूर्ति के लिए बेहद अहम है, और यहां किसी भी तरह की अस्थिरता का असर पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है।

विश्लेषकों का मानना है कि यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है, तो ईरान के भीतर सत्ता का संतुलन पूरी तरह बदल सकता है। एक ओर जहां निर्वाचित सरकार अपनी भूमिका सीमित होती देख रही है, वहीं दूसरी ओर सैन्य ढांचा अधिक आक्रामक और प्रभावी रूप में उभर रहा है। यह परिदृश्य न केवल ईरान के भविष्य के लिए, बल्कि पूरे क्षेत्र की स्थिरता के लिए भी एक बड़ी चुनौती बन सकता है।

फिलहाल, इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि सीमित है, लेकिन जिस तरह की खबरें और संकेत सामने आ रहे हैं, वे यह जरूर दर्शाते हैं कि ईरान के भीतर सब कुछ सामान्य नहीं है। आने वाले दिनों में यह स्पष्ट होगा कि यह केवल अस्थायी सत्ता संघर्ष है या फिर वास्तव में देश में शक्ति संतुलन का स्थायी बदलाव हो रहा है।

जमानत के बाद भी जेल में लूथरा ब्रदर्स: गोवा नाइटक्लब अग्निकांड में नया मोड़, फर्जी NOC ने बढ़ाई मुश्किलें

पणजी। गोवा के चर्चित 'बिर्च बाय रोमियो लेन' नाइटक्लब अग्निकांड मामले में कानूनी प्रक्रिया ने एक नया मोड़ ले लिया है। मर्सेस स्थित अतिरिक्त सत्र न्यायालय ने क्लब के मालिक गौरव लूथरा और सौरभ लूथरा को नियमित जमानत दे दी, लेकिन इसके बावजूद उनकी रिहाई का रास्ता साफ नहीं हो पाया है। जमानत मिलने के तुरंत बाद मापुसा पुलिस ने उन्हें एक नए मामले में हिरासत में ले लिया, जिससे दोनों भाई फिलहाल जेल में ही रहेंगे। दरअसल, यह पूरा मामला 6 दिसंबर 2025 को गोवा के अरपोरा स्थित नाइटक्लब में लगी भीषण आग से जुड़ा है, जिसने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था। इस दर्दनाक हादसे में 25 लोगों की जान चली गई थी, जबकि 50 से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। शुरुआती जांच में सुरक्षा मानकों की अनदेखी और लापरवाही के कई पहलू सामने आए थे। हादसे के बाद दोनों आरोपी देश छोड़कर थाईलैंड भाग गए थे, लेकिन 17 दिसंबर को उन्हें वापस भारत लाया गया और तब से वे उत्तरी गोवा की कोलवाले जेल में बंद हैं।

जमानत मिलने के बाद उम्मीद जताई जा रही थी कि दोनों भाई जल्द ही जेल से बाहर आ जाएंगे, लेकिन तभी एक नया विवाद सामने आ गया। पुलिस का आरोप है कि क्लब के संचालन के लिए आवश्यक दस्तावेजों में फर्जीवाड़ा किया गया था। विशेष रूप से, आबकारी विभाग से लाइसेंस लेने के लिए स्वास्थ्य अधिकारी के फर्जी हस्ताक्षर वाला अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) प्रस्तुत किया गया। इसी आरोप के आधार पर मापुसा पुलिस ने दोनों को नए मामले में हिरासत में ले लिया।

जांच एजेंसियों का मानना है कि यदि दस्तावेज सही तरीके से तैयार किए गए होते और नियमों का पालन किया गया होता, तो शायद इतना बड़ा हादसा टाला जा सकता था। यही कारण है कि अब जांच का फोकस केवल आग लगने के कारणों तक सीमित नहीं है, बल्कि उन प्रशासनिक और कानूनी खामियों पर भी है, जिन्होंने इस त्रासदी को जन्म दिया। इस मामले में एक अन्य आरोपी अजय गुप्ता को पहले ही राहत मिल चुकी है, लेकिन लूथरा ब्रदर्स के लिए हालात अब भी कठिन बने हुए हैं। पुलिस उनसे लगातार पूछताछ कर रही है और यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि फर्जी दस्तावेज तैयार करने में और कौन-कौन लोग शामिल थे।

पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि आखिर इतने बड़े स्तर पर सुरक्षा नियमों की अनदेखी कैसे हो गई। साथ ही यह भी स्पष्ट हो रहा है कि केवल जमानत मिल जाना किसी आरोपी के लिए राहत की गारंटी नहीं होता, खासकर तब जब उसके खिलाफ अन्य गंभीर आरोप भी लंबित हों।

फिलहाल, लूथरा ब्रदर्स की रिहाई पर अनिश्चितता बनी हुई है और यह मामला अब और भी पेचीदा होता जा रहा है। आने वाले दिनों में पुलिस जांच और अदालत की सुनवाई इस पूरे प्रकरण की दिशा तय करेगी, लेकिन इतना तय है कि गोवा का यह अग्निकांड लंबे समय तक कानूनी और प्रशासनिक बहस का केंद्र बना रहेगा।

सीएपीएफ विधेयक पर संसद में टकराव एक कानून, कई सवाल और सियासी संग्राम

नई दिल्ली। संसद का उच्च सदन उस समय सियासी तनाव का केंद्र बन गया, जब 'केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सामान्य प्रशासन) विधेयक, 2026' को ध्वनि मत से पारित कर दिया गया। इस फैसले के साथ ही सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच टकराव खुलकर सामने आ गया। जहां सरकार इसे सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में बड़ा कदम बता रही है, वहीं विपक्ष ने इसे जल्दबाजी में लिया गया निर्णय करार देते हुए लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की अनदेखी का आरोप लगाया। स्थिति इतनी गर्म हो गई कि विपक्षी दलों ने नारेबाजी करते हुए सदन से वॉकआउट तक कर दिया। इस विधेयक का मूल उद्देश्य देश के विभिन्न केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के लिए एक समान प्रशासनिक ढांचा तैयार करना है। अब तक अलग-अलग बलों के लिए अलग नियम और सेवा शर्तें लागू थीं, जिससे समन्वय और प्रशासनिक स्पष्टता में बाधाएं आती थीं। नए कानून के जरिए इन सभी व्यवस्थाओं को एकीकृत कर एक सिंगल सिस्टम लागू करने की योजना बनाई गई है। सरकार का मानना है कि इससे न केवल प्रशासनिक कार्यकुशलता बढ़ेगी, बल्कि बलों के बीच तालमेल भी बेहतर होगा।

हालांकि, इस विधेयक का सबसे विवादित पहलू आईपीएस अधिकारियों की तैनाती से जुड़ा है। नए प्रावधानों के अनुसार, सीएपीएफ में आईजी रैंक के 50 प्रतिशत और एडीजी रैंक के कम से कम 67 प्रतिशत पद आईपीएस अधिकारियों के लिए आरक्षित रहेंगे। विपक्ष का कहना है कि यह व्यवस्था उन कैडर अधिकारियों के साथ अन्याय है, जो वर्षों से इन बलों में सेवा दे रहे हैं और पदोन्नति की प्रतीक्षा कर रहे हैं। विपक्ष ने इस मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट के पिछले फैसले का भी हवाला दिया, जिसमें अर्धसैनिक बलों में आईपीएस अधिकारियों की संख्या धीरे-धीरे कम करने की बात कही गई थी, ताकि आंतरिक कैडर को अधिक अवसर मिल सके।

सदन में बहस के दौरान नित्यानंद राय ने सरकार की ओर से जवाब देते हुए कहा कि यह विधेयक संघीय ढांचे को कमजोर नहीं, बल्कि और मजबूत करेगा। उन्होंने दावा किया कि इससे भर्ती प्रक्रिया अधिक पारदर्शी होगी और जवानों का मनोबल भी बढ़ेगा। दूसरी ओर, विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने इस विधेयक को संसद की प्रवर समिति के पास भेजने की मांग की, ताकि इस पर गहन विचार-विमर्श हो सके। जब सरकार ने इस मांग को खारिज कर दिया, तो विपक्ष ने इसे लोकतांत्रिक संवाद की अनदेखी बताते हुए सदन से बहिर्गमन किया।

इस पूरे घटनाक्रम पर जेपी नड्डा ने विपक्ष की आलोचना करते हुए कहा कि अब विपक्ष का संसदीय प्रक्रियाओं और गंभीर चर्चा में विश्वास ही नहीं रह गया है। उनका कहना था कि सरकार हर मुद्दे पर चर्चा के लिए तैयार है, लेकिन विपक्ष राजनीतिक लाभ के लिए हंगामा कर रहा है।

भारत के केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल देश की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा व्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। सीआरपीएफ जहां आंतरिक सुरक्षा और नक्सल विरोधी अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, वहीं बीएसएफ सीमाओं की निगरानी करता है। आईटीबीपी चीन सीमा की रक्षा करता है, जबकि एसएसबी नेपाल और भूटान सीमा पर तैनात रहता है। सीआईएसएफ देश के महत्वपूर्ण औद्योगिक प्रतिष्ठानों और हवाई अड्डों की सुरक्षा करता है, असम राइफल्स पूर्वोत्तर में उग्रवाद से निपटता है, और एनएसजी विशेष आतंकवाद विरोधी अभियानों के लिए जाना जाता है।

इस विधेयक के पारित होने के बाद अब यह स्पष्ट है कि सरकार सुरक्षा बलों में एकरूपता और केंद्रीकरण की दिशा में आगे बढ़ रही है, लेकिन इसके साथ ही यह भी उतना ही स्पष्ट है कि इस रास्ते में राजनीतिक और प्रशासनिक चुनौतियां कम नहीं हैं। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि यह नया कानून जमीनी स्तर पर कितना प्रभावी साबित होता है और क्या यह वाकई उन समस्याओं का समाधान कर पाएगा, जिनके नाम पर इसे लाया गया है, या फिर यह विवाद और असंतोष को और बढ़ाएगा।

सोशल मीडिया: लत और अतिभोग के बुरे प्रभाव अब स्पष्ट हो गए हैं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। जब कोई व्यक्ति नशे में चूर हो जाता है, तो उसका विनाश निश्चित है। यानी, बर्बादी। चाहे यह नशा सत्ता का हो, धन का हो, शराब का हो, पद का हो या किसी भी अन्य प्रकार का हो, जब यह हद से अधिक हो जाता है, तो यह अति हमेशा विनाश की ओर ले जाती है।

और यही बात सोशल मीडिया पर भी लागू होती है। जब इंटरनेट देश और दुनिया में आया, तो हर कोई इसके कार्यों से मोहित हो गया और आज स्थिति ऐसी हो गई है कि इंटरनेट के बिना जीवन की कल्पना करना भी असंभव है। इस इंटरनेट के आगमन से दैनिक जीवन में मानो एक क्रांति आ गई है और जो काम पहले दिनों या घंटों में होता था, वह अब पलक झपकते ही हो जाता है। ईमेल से लेकर ऑडियो-वीडियो तक, ईमेल सहित मीडिया का आदान-प्रदान इतनी तेजी से होने लगा कि सोशल मीडिया के एक नए युग की शुरुआत हो गई और फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब आदि के आगमन से ऐसा लगता है कि दुनिया भर की जानकारी आम आदमी की भी पहुंच में आ गई है। आम आदमी के लिए इस जानकारी का विवेकपूर्ण उपयोग करना स्वाभाविक है, लेकिन इसके दुष्परिणाम अब दुनिया के सामने आने लगे हैं। यह बात निर्विवाद है कि सोशल मीडिया के आगमन से सूचनाओं का प्रवाह अत्यंत बढ़ गया है, सार्वजनिक अभिव्यक्ति के अनेक नए रास्ते खुल गए हैं और रचनात्मकता दिखाने के लिए एक नया मंच मिल गया है। लेकिन यदि सतर्कता और सावधानी नहीं बरती गई, तो प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदत्त सुविधाएं अक्सर मुसीबत का कारण बन सकती हैं। और दुनिया में यह सिलसिला पहले ही शुरू हो चुका है।

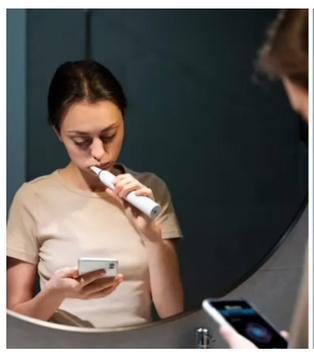

सूरत: रेनबसेरा का निर्माण गरीबों के लिए किया गया था, लेकिन अब रखरखाव की कमी और गंदगी ने समस्या खड़ी कर दी है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत नगर निगम ने शहर के सशुल्क उपयोग वाले क्षेत्रों की छतों पर बेघर लोगों को आश्रय प्रदान करने के लिए वर्षा आश्रय बनाने की पहल की थी। लेकिन निर्माण के बाद भी, रखरखाव की उपेक्षा के कारण, वर्षा आश्रयों की हालत जर्जर मकानों जैसी हो गई है।

अब बात करते हैं कि क्या बारिश के पानी की निकासी के लिए बनाए गए बसेरा का पूरा मकसद ही नाकाम हो गया है। तस्वीर में दिख रहे परिवार शहर के अलग-अलग इलाकों जैसे सिविल क्रॉसरोड्स, माजुरा गेट, उधना दरवाजा, दिल्ली गेट, वराछा इलाके से गुजरने वाले ओवरब्रिज के नीचे डेरा डाले हुए हैं और पुल के नीचे गंदगी का अड्डा बना रखा है। वहीं दूसरी ओर, गंदे कपड़े पहने हुए परिवार के सदस्यों का सिग्नल के पास खड़ी गाड़ियों पर बोतलों से पानी छिड़कना और गंदे कपड़ों से खिड़कियां साफ करना कोई आम बात नहीं है। और अगर ऐसे दृश्य आम जनता को दिख रहे हैं, तो ड्यूटी पर तैनात ट्रैफिक पुलिस या नगर पुलिस क्यों नजर नहीं आती? क्या इस तरह की गंदगी को हटाना उनका फर्ज नहीं है? साथ ही, चूंकि खिड़कियां साफ करना और खिड़कियों पर दस्तक देकर भीख मांगना ड्राइवरों का ध्यान भटकाता है, इसलिए इस गंदगी को तुरंत हटाना जरूरी है।

छोटे बच्चे भीख मांग रहे हैं। ड्राइवर का ध्यान सिग्नल पर है, ऐसे में अगर कोई दुर्घटना हो जाए तो कौन जिम्मेदार होगा? चारों सड़कों पर इस तरह गंदगी होना ठीक नहीं है।

संत बजरंगदास ने गर्वपूर्वक गुजरात में जीवन के मार्ग का रहस्य बताया, सत्य और आध्यात्मिकता का मार्ग दिखाया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। गुजरात के प्रसिद्ध 108वें महंत, जो वर्षों से गोधरा के सांचेलाव रेलवे स्टेशन के सामने स्थित आदिवासी क्षेत्र में उपदेश देकर अपने शिष्यों को व्यसनों से मुक्ति दिलाने का प्रयास कर रहे हैं। हजारों लोग उनके दर्शन और सत्संग के लिए उनके आश्रम आते हैं। उनकी अपार कृपा उनके समर्पित शिष्य संतश्री बजरंगदास पर है। संतश्री बजरंगदास 108वें महंतश्री चेतदास साहब आज सूरत स्थित दैनिक समाचार पत्र 'गरवी गुजरात' के कार्यालय में आए और 'गरवी गुजरात' के पत्रकारों को आशीर्वाद दिया। उन्होंने जीवन का अर्थ समझाया और अनेक उदाहरणों के माध्यम से मानव जीवन का मार्ग दिखाया। उन्होंने पत्रकारों से निडर और निष्पक्ष रूप से अच्छी बातों को उजागर करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि सत्य की हमेशा जीत होती है।

नवसर्जन संस्कृति हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

आधुनिक रिश्तों की परिवर्तनशीलता को स्वीकारें

आधुनिकता के संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहे वयस्कों के रिश्तों को लेकर समय-समय पर देश की विभिन्न अदालतों के फैसले सामने आते रहे हैं। उनमें कई विरोधाभास भी नजर आते रहे हैं। इसी तरह इलाहाबाद उच्च न्यायालय के दो हालिया फैसलों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और विवाह संस्था के बीच पैदा हुई नाजुक खाई को ही उजागर किया है। जहां एक मामले में, न्यायालय का कहना था कि वयस्कों के बीच आपसी सहमति से बना लिव इन रिलेशनशिप, भले ही एक साथी विवाहित हो, अब अपराध की श्रेणी में नहीं आता। अब भले ही विवाह संस्था के पारंपरिक स्वरूप को मानने वाले इस बात को स्वीकार न करें, लेकिन इससे जुड़े हुए तमाम यक्ष प्रश्न जरूर हमारे सामने हैं। वहीं एक अन्य घटनाक्रम में न्यायालय ने एक ऐसे ही दंपति को संरक्षण देने से इनकार कर दिया। अदालत का कहना था कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर पति या पत्नी के कानूनी अधिकारों को कमजोर करने की इजाजत नहीं दी जा सकती है। यह स्पष्ट विरोधाभास वास्तव में एक गहरी कानूनी रिक्तता को ही प्रतिबिंबित करता है। दरअसल, भारतीय कानून ने संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार के हिस्से के रूप में, परंपरागत भारतीय समाज में लिव इन रिलेशनशिप को मान्यता देने की दिशा में सावधानीपूर्वक ही कदम बढ़ाया है। इसके बावजूद भी, यह विवाह को एक कानूनी रूप से स्वीकृत संस्था के रूप में सर्वोच्च प्राथमिकता देता रहा है। जिसके अंतर्गत वयस्कों के अपने अधिकार और दायित्व भी हैं। निर्विवाद रूप से, जिन्हें आसानी से दरकिनार भी नहीं किया जा सकता है। इस परिणाम के मूल में एक न्यायिक विसंगति भी है। जहां न्यायालय लिव इन रिलेशन को अपराध की श्रेणी से तो बाहर कर देता है, लेकिन उनके परिणामों को वैध ठहराने से हिचकिचाता है। दरअसल, वयस्कों के रिश्तों में यह तनाव सिर्फ कानूनी ही नहीं बल्कि सामाजिक और नैतिक भी है।

निर्विवाद रूप से, आज भारतीय समाज एक बड़े संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहा है। जिसमें भारतीय परंपरागत जीवन मूल्यों तथा तेजी से बदलते रिश्तों के बीच का एक द्वंद्व भी शामिल है। यह एक हकीकत है कि आधुनिक जीवन में रिश्तों में स्वतंत्रता की बयार स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता से परवान चढ़ी है। लेकिन भारत जैसे परंपरावादी समाज में सदियों से विवाह एक अनुबंध होने के साथ-साथ एक गहरी सामाजिक मान्यता भी है। लेकिन इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि भारतीय समाज में आधुनिक रिश्तों की वास्तविकता कहीं अधिक परिवर्तनशील भी है। वयस्कों के रिश्तों में व्यक्ति आगे बढ़ता है, कभी-कभी बिना औपचारिक समापन के भी। लेकिन यह भी एक हकीकत है कि कानून भी मौजूदा परिदृश्य की इस वास्तविकता से अनभिज्ञ नहीं रह सकता। यह भी एक सत्य है कि वयस्कों के रिश्तों को संरक्षण या मान्यता से वंचित करना, ऐसे रिश्तों को समाप्त नहीं करता है। वास्तव में यह केवल उन्हें असुरक्षा और कानूनी अनिश्चितता की ओर धकेल देता है। सही मायनों में आवश्यकता न्यायिक असंगति की नहीं है, बल्कि विधायी स्पष्टता की ही है। वास्तव में एक हकीकत यह भी है कि भारतीय समाज में वैवाहिक अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाने वाले एक प्रभावी ढांचे की लंबे समय से आवश्यकता महसूस की जाती रही है। हमें मौजूदा परिदृश्य में यह बात स्वीकार करनी होगी कि यद्यपि विवाह संस्था संरक्षण की हकदार है, फिर भी पुरुष या स्त्री की व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अनिश्चित काल तक इसके अधीन बंधक बनाकर नहीं रखा जा सकता है। इन परिस्थितियों में, अंततः कानून को एक सरल सत्य को प्रतिबिंबित करना चाहिए कि जब रिश्ते टूट जाते हैं, तो व्यक्तियों को गरिमा के साथ आगे बढ़ने की अनुमति देना हमारी सामाजिक व्यवस्था के लिये खतरा नहीं है। बल्कि यह उसका एक आवश्यक अनुकूलन ही है। ऐसे समय पर जब तकनीक व सूचना क्रांति से पूरी दुनिया एक संस्कृति में ढल रही है, हम अलग-थलग नहीं रह सकते। हमें पीढ़ियों के अंतराल से उपजी सोच का भी सम्मान करना होगा।

फोर्टिफाइड चावल से जुड़े स्वास्थ्य के जोखिम

"सार्वजनिक वितरण प्रणाली में 'फोर्टिफाइड' चावल का वितरण अनिवार्य करना सवाल खड़े करता है। कहा गया कि चावल के दानों में कृत्रिम रूप से आयरन और विटामिन मिलाकर देश की बड़ी आबादी को 'छिपी हुई भूख' से मुक्त किया जा सकता है। किंतु, इस योजना के स्वास्थ्य जोखिम अब चर्चा में है।"

सरकार को अपने उस आदेश को वापस लेना पड़ा, जिसके तहत विभिन्न सार्वजनिक वितरण तंत्र के माध्यम से 'फोर्टिफाइड' चावल के वितरण को अनिवार्य किया गया था। दरअसल, इस बात के कोई प्रमाण नहीं थे कि इस तरह तैयार चावल रक्त-अल्पता यानी एनीमिया से लड़ने में कारगर है। वहीं आईआईटी खड़गपुर की एक रिपोर्ट में इनके भंडारण को मानव स्वास्थ्य के लिए घातक बताया गया था।

भारत में केंद्रीय पूल में चावल का कुल भंडार लगभग 679.32 लाख टन तक पहुंच गया है, जो निर्धारित बफर मानदंड, लगभग 76.1 लाख टन से 9 गुना अधिक है। इसके बावजूद सार्वजनिक वितरण प्रणाली में 'फोर्टिफाइड' यानी संवर्धित चावल के वितरण को अनिवार्य कर दिया जाना कई सवाल खड़े कर रहा था। देश की सभी सार्वजनिक वितरण दुकानों और आंगनवाड़ी आदि में कोई 350 लाख मीट्रिक टन फोर्टिफाइड चावल के वितरण की व्यवस्था की गई थी। कहा तो यह गया कि चावल के दानों में कृत्रिम रूप से लौह तत्व और विटामिन मिलाकर देश की एक बड़ी आबादी को 'छिपी हुई भूख' से मुक्त किया जा सकता है। किंतु, इस महत्वाकांक्षी योजना के पीछे छिपे स्वास्थ्य जोखिम और निर्माण प्रक्रिया की अनिश्चितता अब गंभीर विमर्श का विषय बन गई है। पायलट प्रोजेक्ट की आड़ में सारे देश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली में यह चावल डालने से बड़ी आबादी पर संकट के बादल भी मंडरा रहे हैं।

सबसे पहले टूटे हुए चावलों को पीसकर आटा बनाया जाता है। इस आटे में आयरन (लोहा), फोलिक एसिड और विटामिन बी12 का एक निर्धारित मिश्रण मिलाया जाता है। इसमें जिंक, विटामिन ए, बी1, बी2, बी3 और बी6 भी मिलाए जाते हैं। मिश्रण में पानी मिलाकर इसे एक 'एक्सट्रूडर' मशीन में डालते हैं, जो इसे ठीक चावल के दाने जैसा आकार देती है। इन्हें फोर्टिफाइड राइस कर्नेल कहा जाता है। इन कृत्रिम दानों को सामान्य चावल के साथ 1:100 के अनुपात में मिलाया जाता है।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे चावल सभी के लिए एक समान लाभकारी नहीं हैं। खासकर थैलेसीमिया और सिकल सेल एनीमिया जैसे आनुवंशिक रोगों से पीड़ितों के लिए। ऐसे मरीजों के शरीर में पहले ही आयरन अधिक होता है और आयरन युक्त चावल खाने से उनके अंग खराब होने का खतरा बढ़ सकता है। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, इन रोगों से पीड़ित व्यक्तियों के शरीर में आयरन का संचय प्राकृतिक रूप से अधिक होता है। उन्हें बार-बार रक्त चढ़ाना पड़ता है, जिससे उनके शरीर के अंगों पर पहले से ही अतिरिक्त लोहे का दबाव रहता है। यदि ऐसे मरीजों को नियमित लौह-संवर्धित चावल खिलाया जाता है, तो उनके शरीर में 'आयरन ओवरलोड' की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह अतिरिक्त लोहा उनके लीवर, हृदय और गुर्दों को धीरे-धीरे नष्ट कर सकता है।

विडंबना यह कि जिन क्षेत्रों में इन बीमारियों का प्रकोप सबसे अधिक है, वहीं सरकारी राशन भोजन का एकमात्र साधन है। पैकेटों पर लिखी बारीक चेतावनी ग्रामीण व निरक्षर आबादी तक पहुंचने में विफल रही, जिससे अनजाने में एक बड़ा वर्ग स्वास्थ्य संकट की ओर धकेला जा रहा है। शोध बताते हैं कि जब हम सिंथेटिक आयरन यानी कृत्रिम लोहे का अधिक सेवन करते हैं, तो वह पूरे अवशोषित नहीं हो पाता। बचा हुआ लोहा आंतों में ई-कोलाई, आदि हानिकर बैक्टीरिया की वृद्धि में सहायक होता है, जिससे लाभकारी बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं। इससे दीर्घकाल में पाचन के गंभीर विकार पैदा हो सकते हैं। शरीर में लोहे की अधिकता 'फ्री रेडिकल्स' पैदा करती है, जिससे कोशिकाओं में 'ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस' बढ़ता है। यह स्थिति समयपूर्व बुढ़ापे, मधुमेह और हृदय रोगों के खतरे बढ़ा सकती है।

संवर्धित चावल के निर्माण की तकनीक, जिसे 'एक्सट्रूज़न' कहा जाता है, सैद्धांतिक रूप से तो सटीक लगती है, लेकिन इसके क्रियान्वयन में भारी खामियां हैं। अनेक चावल मिलों में पोषक तत्वों के मिश्रण (प्रीमिक्स) की मात्रा का सही संतुलन नहीं रखा जा रहा है। इसके अतिरिक्त, निर्माण में उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल और रसायनों की शुद्धता पर भी कोई कड़ा नियंत्रण नहीं है। यही कारण है कि पकाते समय इस चावल का स्वाद और गंध बदल जाती है, जिससे आम जनता के मन में इसके 'प्लास्टिक चावल' होने का भ्रम पैदा होता है। भंडारण के दौरान नमी और तापमान के कारण इन कृत्रिम दानों में ऑक्सीकरण (ऑक्सीडेशन) की प्रक्रिया शुरू हो सकती है, जो चावल को विषाक्त बना सकती है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में 'एक ही दवा सबको' की नीति अक्सर प्रतिकूल परिणाम देती है। एनीमिया के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें स्वच्छता की कमी, पेट के कीड़े या अन्य संक्रमण शामिल हैं। केवल चावल में लोहा मिलाकर पूरी आबादी को खिलाना अदूरदर्शी कदम प्रतीत होता है। जब सरकार केवल चावल के फोर्टिफिकेशन पर अरबों रुपये खर्च करती है, तो पूरा ध्यान 'धान' की खेती और वितरण पर केंद्रित हो जाता है। इससे बाजरा, रागी, कोदो और ज्वार जैसे 'श्री अन्न' (मोटे अनाज), जो प्राकृतिक रूप से पोषक तत्वों से भरपूर हैं, हाशिए पर चले जाते हैं। कुपोषण मिटाने का संकल्प प्रशंसनीय है, लेकिन यह जन स्वास्थ्य की कीमत पर होना सही नहीं।

सरकार को चाहिए कि वह उन क्षेत्रों में गैर-संवर्धित सामान्य चावल का विकल्प भी खुला रखे, जहां आनुवंशिक बीमारियों का प्रसार अधिक है। फोर्टिफाइड चावल को कुपोषण का अंतिम सत्य मान लेना एक बड़ी भूल होगी। यह एक 'आपातकालीन हस्तक्षेप' तो हो सकता है, लेकिन कभी भी 'संपूर्ण पोषण' का विकल्प नहीं बन सकता। हमें तकनीक से अधिक अपनी मिट्टी की विविधता और जैव-विविधता पर भरोसा करना होगा।

प्रेरणा

खामोश श्रोता से न्याय के शिखर तक: एक अनसुनी प्रतिभा की अद्भुत कहानी

जीवन में कुछ कहानियाँ ऐसी होती हैं जो केवल प्रेरणा ही नहीं देतीं, बल्कि हमारे सोचने का नजरिया भी बदल देती हैं। यह कथा एक ऐसे बालक की है, जिसके पास न साधन थे, न सुविधाएँ, लेकिन उसके भीतर सीखने की जो आग थी, उसने उसे दुनिया के सबसे ऊँचे मंच तक पहुँचा दिया। यह कहानी बताती है कि असली ताकत परिस्थितियों में नहीं, बल्कि मनुष्य की इच्छा और लगन में छिपी होती है।

एक साधारण से विद्यालय में एक दिन एक महत्वपूर्ण घटना घटी। शहर से एक स्कूल इंस्पेक्टर निरीक्षण के लिए आए। उनका उद्देश्य विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था को परखना था। जैसे ही वे कक्षा में पहुँचे, उन्होंने विद्यार्थियों की योग्यता जांचने के लिए एक कठिन प्रश्न पूछ लिया। प्रश्न इतना जटिल था कि पूरी कक्षा में सन्नाटा छा गया। कोई भी छात्र उत्तर देने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था।

शिक्षक के लिए यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक थी। उनके चेहरे पर घबराहट साफ झलक रही थी। उन्हें डर था कि यदि कोई भी छात्र उत्तर नहीं दे पाया, तो उनकी प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिह्न लग सकता है। वातावरण में तनाव बढ़ता जा रहा था। इसी दौरान कक्षा की खिड़की के बाहर एक बालक खड़ा सब कुछ ध्यान से सुन रहा था। वह न तो उस स्कूल का छात्र था और न ही उसके पास पढ़ने की कोई औपचारिक व्यवस्था थी। फिर भी उसकी आँखों में एक अलग ही चमक थी—जिज्ञासा की, सीखने की और आगे बढ़ने की। अचानक वह बालक बिना किसी झिझक के कक्षा के अंदर आया और विनम्रता से बोला, "सर, इस प्रश्न का उत्तर मुझे पता है।" उसकी बात सुनकर सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए। एक अनजान बालक, जो इस विद्यालय का हिस्सा भी नहीं था, वह इतने आत्मविश्वास के साथ उत्तर देने की बात कर रहा था। इंस्पेक्टर ने उसे उत्तर देने की अनुमति दी। बालक ने बड़े ही सरल और स्पष्ट शब्दों में उस कठिन प्रश्न का उत्तर दे दिया। उसका उत्तर इतना सटीक था कि कक्षा में मौजूद सभी लोग दंग रह गए। शिक्षक और विद्यार्थी उसकी प्रतिभा को देखकर हैरान थे, जबकि इंस्पेक्टर के चेहरे पर संतोष और आश्चर्य दोनों झलक रहे थे। इंस्पेक्टर ने उत्सुकतावश उससे पूछा, "तुम किस कक्षा में पढ़ते हो?" बालक ने बड़ी सहजता से उत्तर दिया, "मैं किसी कक्षा में नहीं पढ़ता। मैं तो पास में अपनी गाय चराने आता हूँ। जब भी समय मिलता है, मैं इस खिड़की के पास खड़ा होकर आपकी बातें सुनता रहता हूँ। मुझे पढ़ाई बहुत अच्छी लगती है, इसलिए जो कुछ भी यहाँ पढ़ाया जाता है, मैं ध्यान से सुनता हूँ।" उसकी यह बात सुनकर सभी के मन में एक गहरी भावना जाग उठी। यह बालक बिना किसी औपचारिक शिक्षा के, केवल सुनकर इतना ज्ञान अर्जित कर चुका था। उसकी लगन और जिज्ञासा ने उसे वहाँ तक पहुँचा दिया था, जहाँ पहुँचने के लिए कई लोगों को वर्षों की पढ़ाई करनी पड़ती है। इंस्पेक्टर ने तुरंत उसकी प्रतिभा को पहचाना। उन्होंने उसी समय आदेश दिया कि इस बालक का विद्यालय में प्रवेश कराया जाए। साथ ही उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि उसे छात्रवृत्ति प्रदान की जाए, ताकि उसकी पढ़ाई में कोई बाधा न आए। यह निर्णय उस बालक के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। अब उसे न केवल कक्षा में बैठकर पढ़ने का अवसर मिला, बल्कि अपने ज्ञान को और अधिक गहराई से समझने का मौका भी मिला। उसकी लगन पहले से ही मजबूत थी, अब उसे सही दिशा भी मिल गई। वह दिन-रात मेहनत करने लगा और अपनी पढ़ाई में निरंतर प्रगति करता गया।

समय बीतता गया और वही बालक अपनी मेहनत और समर्पण के बल पर शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को छूने लगा। उसने यह साबित कर दिया कि यदि किसी के भीतर सच्ची लगन हो, तो वह किसी भी परिस्थिति को अपने पक्ष में बदल सकता है। आगे चलकर वही बालक महान न्यायविद् डॉ. राधा बिनोद पाल के रूप में विश्वभर में प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने अपने ज्ञान, सिद्धांतों और न्यायप्रियता से भारत का नाम अंतर्राष्ट्रीय मंच पर गौरवान्वित किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जब टोक्यो ट्रायल आयोजित हुआ, तब उन्हें न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया। यह ट्रायल विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसमें युद्ध अपराधों का निर्णय किया जा रहा था। अधिकांश न्यायाधीश एक ही दिशा में निर्णय ले रहे थे, लेकिन डॉ. पाल ने अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।

उन्होंने बहुमत से अलग जाकर एक ऐतिहासिक असहमति व्यक्त की। उनका मानना था कि न्याय केवल विजेताओं के नजरिए से नहीं होना चाहिए, बल्कि वह निष्पक्ष और सार्वभौमिक होना चाहिए। उनका यह निर्णय न केवल साहस का प्रतीक था, बल्कि यह न्याय के प्रति उनकी अटूट निष्ठा को भी दर्शाता है। उनके इस फैसले ने पूरी दुनिया को सोचने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि सच्चा न्याय वही है, जो बिना किसी दबाव और पक्षपात के किया जाए। उनकी यह विचारधारा आज भी न्याय के क्षेत्र में एक आदर्श के रूप में देखी जाती है। इस प्रेरणादायक कथा से हमें कई महत्वपूर्ण सीख मिलती हैं। सबसे पहली और सबसे बड़ी सीख यह है कि सीखने की इच्छा ही सफलता की कुंजी है। यदि हमारे भीतर जिज्ञासा और लगन है, तो हम किसी भी परिस्थिति में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि समाज को हर प्रतिभा को पहचानने और उसे आगे बढ़ाने का अवसर देना चाहिए। यदि उस दिन इंस्पेक्टर ने उस बालक की प्रतिभा को नजरअंदाज कर दिया होता, तो शायद दुनिया एक महान न्यायविद् से वंचित रह जाती।

यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं होती। सच्ची शिक्षा वह है, जो हमें जीवन के हर अनुभव से कुछ नया सिखाए। खिड़की के बाहर खड़ा वह बालक यह साबित करता है कि ज्ञान कहीं से भी प्राप्त किया जा सकता है, बस उसे पाने की सच्ची इच्छा होनी चाहिए। आज के युग में जब हमारे पास हर प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं, तब भी हम कई बार आलस्य या बहाने बनाकर अपने लक्ष्यों से दूर हो जाते हैं। ऐसे में यह कहानी हमें झकझोरती है और याद दिलाती है कि यदि एक बालक बिना किसी संसाधन के इतना आगे बढ़ सकता है, तो हम क्यों नहीं? अंततः, यह कथा केवल एक व्यक्ति की सफलता की कहानी नहीं है, बल्कि यह एक संदेश है—एक प्रेरणा है, जो हमें अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह हमें सिखाती है कि सच्ची लगन, मेहनत और सही अवसर मिलने पर कोई भी व्यक्ति असंभव को संभव बना सकता है। यही इस कहानी का सार है और यही इसकी सबसे बड़ी ताकत।

संतुलित विदेश नीति का सुफल

संकट में ही वास्तविक चरित्र का परिचय मिलता है। इस संदर्भ में पश्चिम एशिया में जारी युद्ध एक ताजा पड़ाव बनकर उभरा है। अमेरिका और इजरायल बनाम ईरान युद्ध ने विश्व की सुरक्षा, आर्थिकी और स्थिरता को खतरे में डाल दिया है। हर देश को इससे उपजी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, पर भारत ने इस संकट में जैसी कूटनीति का प्रदर्शन किया, वह परिपक्व एवं फलदायी साबित हुई है। इसके परिणाम हमारे सामने हैं।

देखा जाए तो पश्चिम एशिया में भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा, प्रवासियों का कल्याण और भूराजनीतिक तथा भूआर्थिकी से जुड़े मुद्दे अहम हैं। भारत द्वारा आयात किए जाने वाले कुल तेल का लगभग 50 प्रतिशत और कुल गैस का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा पश्चिम एशिया से आता है। जब ईरान ने होर्मुज जलमार्ग से तेल एवं गैस ले जाने वाले जहाजों पर हमले शुरू किए, तो नई दिल्ली ने तेहरान के साथ सीधे बातचीत का विकल्प चुना और अपने जहाजों की उस संकरे समुद्री मार्ग से सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित कराई। भारतीय तेल और गैस वाहक जहाजों और नाविकों की सुरक्षा इसीलिए संभव हुई, क्योंकि तेहरान ने नई दिल्ली को अपना मित्र और शत्रु खेमे से दूर माना है। ईरान ने भारत को इस श्रेणी में शामिल किया, क्योंकि भारत ने उस पर हमला करने वाले अमेरिकी-इजरायली खेमे की कोई सामरिक सहायता नहीं की। व्यावहारिक कारणों के चलते भारत ने भले ही अमेरिका-इजरायल आक्रमण की प्रत्यक्ष निंदा नहीं की हो, किंतु युद्ध की शुरुआत से ही भारत बातचीत और शांतिपूर्ण समाधान के समर्थन में खड़ा है।

इतिहास पर दृष्टि डालें तो भारत ने ईरान के साथ 2003 से ही रणनीतिक साझेदारी निभाई है। इसके अंतर्गत तेल खरीदारी के साथ ही चाबहार बंदरगाह के निर्माण में योगदान दिया। पिछले कुछ वर्षों में पश्चिमी आर्थिक प्रतिबंधों के कारण भारत और ईरान के बीच कारोबार कुछ सिकुड़ा है, लेकिन भारत प्रतिबंधों में ढील दिए जाने के लिए प्रयासरत रहा है। ऐसे में विपक्षी दलों के वे आरोप आधारहीन ही हैं कि मोदी सरकार ने अमेरिका-इजरायल के दबाव में ईरान को ताक पर रख दिया है। यह भी अनदेखा नहीं किया जा सकता कि एक ओर ईरान स्वयं भारत को अपना मित्र मान रहा है तो दूसरी ओर युद्ध में ईरानी हमलों से त्रस्त खाड़ी के देशों ने भी भारत को खास दोस्त करार दिया है। संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कुवैत, कतर, ओमान, बहरीन आदि में एक करोड़ से अधिक भारतीय नागरिक रहते हैं। युद्ध में निरंतर बमबारी के बीच इतने विशाल भारतीय प्रवासी समुदाय की सुरक्षा की गारंटी और उनमें से लाखों की घर वापसी तभी संभव हो पाई है, क्योंकि भारत ने खाड़ी देशों की सरकारों के साथ परस्पर विश्वास आधारित संबंध विकसित किए हैं। युद्ध की शुरुआत से अब तक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने लगातार खाड़ी के शीर्ष नेताओं से संवाद बनाए रखा है। खाड़ी देशों ने केवल प्रवासियों के मुद्दे को लेकर ही भारत का साथ नहीं दिया है, अपितु आपात स्थितियों में काम आने वाले भारत के रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार को भरने में अमीरात और सऊदी की अहम भूमिका भी रही है। ओशियानिया और एशिया से लेकर यूरोप तक जब युद्ध के चलते पेट्रोल और डीजल के दाम आसमानी ऊंचाइयों पर पहुंच गए, तब भारत में कोई वृद्धि नहीं दिखी है। केवल प्रीमियम उत्पादों में मामूली बढ़ोतरी हुई है। संकट में ऐसे चमत्कारिक परिणाम का पूरा श्रेय हमारी बहुआयामी और संतुलित विदेश नीति को जाता है। इस युद्ध में भारत ही संभवतः ऐसा अकेला देश है जो इजरायल, ईरान और खाड़ी देशों का एकसमान विश्वासपात्र बनकर अपने राष्ट्रीय हितों को साध पा रहा है।

जहां तक मध्यस्थता के मुद्दे की बात है तो पाकिस्तान की सक्रियता के चलते कुछ आलोचकों ने भारत की कूटनीति पर सवाल उठाए हैं, लेकिन यह कसौटी उचित नहीं है। एक तो ईरान ने पाकिस्तानी मध्यस्थता को किसी भी समर्थन से इन्कार कर दिया है और दूसरा इसे लेकर भारत और पाकिस्तान की तुलना अतार्किक है। अमेरिका ने पाकिस्तान को हमेशा एक मोहरे के रूप में इस्तेमाल किया है। रिचर्ड निक्सन और रोनाल्ड रीगन से लेकर जार्ज डब्ल्यू बुश एवं बराक ओबामा तक कई अमेरिकी राष्ट्रपतियों ने पाकिस्तान का इस्तेमाल करके चीन, अफगानिस्तान और ईरान में अमेरिकी हितों को ही आगे बढ़ाया है।

जबकि इस्लामिक भाईचारे और सहानुभूति का मुखौटा पहनते हुए भी पाकिस्तान ने अमेरिकी आर्थिक और सैन्य सहयोग के लोभ में इस्लामी पड़ोसियों की पीठ में कई बार छुरा भोंका है। ट्रंप पाकिस्तान के इस दोहरे रवैये से बखूबी वाकिफ हैं जिसका उदाहरण उनका यह बयान भी रहा कि उन्हें इसी प्रकार के कमजोर सौदेबाज देश पसंद हैं। ट्रंप ने एक सवाल के जवाब में यही कहा कि 'मुझे हमेशा हारे हुए लोग अच्छे लगते हैं, क्योंकि वे मेरी सफलता की कहानियां सुनते हैं और गुणगान करते हैं।' उनका इशारा पाकिस्तान की ओर ही था। इससे पहले पाकिस्तान ने ट्रंप को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित करके, उन्हें भारत के साथ परमाणु युद्ध रोकने वाले मसीहा के रूप में सम्मानित करके और रियल एस्टेट, क्रिप्टोकरेंसी तथा खनिजों में संदिग्ध सौदों की पेशकश करके उनके अहं की भरसक तुष्टि का प्रयास किया है। पाकिस्तान के जैसे पैंतरे भारत सरीखे स्वाभिमानी और उभरती महाशक्ति को शोभा नहीं देते। जिन तौर-तरीकों से पाकिस्तान पश्चिम एशिया के युद्ध में समाधान प्रदाता के रूप में पेश आ रहा है, उनसे स्वायत्तता और संप्रभुता का नुकसान होता है। वैसे भी ट्रंप जैसे अस्थिर व्यक्ति का चापलूस बनकर पश्चिम एशिया में मध्यस्थता करना खतरों से खाली नहीं है और भारत ने इस मामले में परहेज करके अपने आप को अनावश्यक उलझनों से बचाने का ही काम किया है। वस्तुतः, इस युद्ध में भारत की कारगर रणनीति ने पश्चिम एशिया और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में अपनी स्थिति को और मजबूत करने की संभावनाओं को खुला रखा है। किसी भी बड़े अंतरराष्ट्रीय संकट में विकल्प सरल नहीं होते हैं और भारत ने सबसे तर्कसंगत मार्ग चुना है, जिससे दीर्घकालिक लाभ प्राप्त होंगे।

अभियान

शत्रुंजय की पवित्र गोद में: पालीताणा की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक महागाथा

भारत की आध्यात्मिक परंपरा में कुछ स्थल ऐसे हैं, जहां केवल दर्शन ही नहीं, बल्कि आत्मा का शुद्धिकरण भी होता है। गुजरात के भावनगर जिले में स्थित पालीताणा ऐसा ही एक दिव्य तीर्थ है, जो केवल एक नगर नहीं, बल्कि एक जीवंत आध्यात्मिक अनुभव है। यह वह स्थान है, जहां आस्था, कला, तपस्या और अहिंसा एक साथ मिलकर मानव को उसकी आत्मा के गहरे सत्य से परिचित कराते हैं। शत्रुंजय पर्वत की गोद में बसा यह पवित्र धाम जैन धर्म का हृदय माना जाता है, और इसे 'मंदिरों का शहर' कहना भी शायद इसकी महिमा को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर पाता।

पालीताणा का वातावरण जैसे ही कोई व्यक्ति महसूस करता है, उसे एक अदृश्य शांति घेर लेती है। यहां का हर पत्थर, हर सीढ़ी और हर मंदिर सदियों की साधना, त्याग और भक्ति की कहानी कहता है। शत्रुंजय नदी के किनारे स्थित यह पर्वत केवल भौगोलिक संरचना नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र है, जहां हजारों वर्षों से साधु-संत और श्रद्धालु मोक्ष की प्राप्ति की कामना लेकर आते रहे हैं।

जैन परंपरा के अनुसार, 24 तीर्थंकरों में से 23 ने इस पर्वत को अपने चरणों से पवित्र किया है। विशेष रूप से प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ, जिन्हें ऋषभदेव भी कहा जाता है, का इस स्थान से गहरा संबंध है। मान्यता है कि उन्होंने यहां अनेक बार तपस्या की और अपने दिव्य उपदेशों से इस भूमि को आध्यात्मिक चेतना से भर दिया। इसी कारण यह स्थान 'शाश्वत तीर्थ' के रूप में जाना जाता है, जहां से अनगिनत आत्माओं को मुक्ति का मार्ग प्राप्त हुआ।

पालीताणा की सबसे अनूठी विशेषता है यहां स्थित मंदिरों का विशाल समूह। शत्रुंजय पर्वत पर लगभग 900 से अधिक मंदिर हैं, जिनमें 17,000 से भी अधिक प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं। ये सभी मंदिर संगमरमर से निर्मित हैं और उनकी नक्काशी इतनी सूक्ष्म और अद्भुत है कि उन्हें देखकर लगता है मानो पत्थरों में प्राण बस गए हों। इन मंदिरों की वास्तुकला न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय शिल्पकला की चरम उत्कृष्टता का भी उदाहरण है। इस पर्वत की सबसे ऊंची चोटी पर स्थित आदिश्वर मंदिर पूरे तीर्थ का केंद्र है। यह मंदिर भगवान आदिनाथ को समर्पित है और इसकी भव्यता अद्वितीय है। मंदिर के गर्भगृह में स्थापित स्वर्णमयी प्रतिमा भक्तों को मंत्रमुग्ध कर देती है। जैसे ही कोई श्रद्धालु यहां पहुंचता है, उसे एक दिव्य ऊर्जा का अनुभव होता है, जो उसके भीतर की अशांति को समाप्त कर देती है। यह केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन का स्थान है।

पालीताणा के मंदिरों की संरचना भी अत्यंत रोचक है। यहां मंदिरों को विभिन्न समूहों में बांटा गया है, जिन्हें 'टूंक' कहा जाता है। प्रत्येक टूंक का अपना अलग महत्व और इतिहास है। कुमारपाल टूंक, विमलशाह टूंक और अन्य प्रमुख टूंकों में स्थित मंदिर अपने आप में अद्वितीय हैं। इन मंदिरों की दीवारों, स्तंभों और छतों पर की गई नक्काशी इतनी बारीक है कि हर आकृति एक अलग कथा कहती प्रतीत होती है।

चौमुख मंदिर भी यहां का एक महत्वपूर्ण आकर्षण है। यह मंदिर चारों दिशाओं में खुला हुआ है, जिससे भगवान के दर्शन हर दिशा से किए जा सकते हैं। यह केवल वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण नहीं, बल्कि यह उस विचार का प्रतीक भी है कि ईश्वर हर दिशा में समान रूप से विद्यमान हैं। इस मंदिर का निर्माण 17वीं शताब्दी में हुआ था और आज भी यह श्रद्धालुओं को अपनी भव्यता से आकर्षित करता है।

पालीताणा केवल बड़े मंदिरों के लिए ही नहीं, बल्कि अनेक छोटे-छोटे पवित्र स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है। पुंडरीक स्वामी का मंदिर, अष्टपद मंदिर, रायण वृक्ष और भरत चक्रवर्ती से संबंधित स्थल यहां की आध्यात्मिकता को और भी गहरा बनाते हैं। प्रत्येक स्थान का अपना एक विशेष महत्व है और श्रद्धालु यहां आकर केवल दर्शन ही नहीं, बल्कि एक आंतरिक शांति का अनुभव भी करते हैं।

इस तीर्थ की यात्रा स्वयं में एक तपस्या मानी जाती है। शत्रुंजय पर्वत पर पहुंचने के लिए लगभग 3,500 से अधिक सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। यह यात्रा आसान नहीं होती, लेकिन श्रद्धालु इसे पूरे उत्साह और भक्ति के साथ पूर्ण करते हैं। कई लोग इस यात्रा को मौन रहकर और खाली पेट करते हैं, जो आत्मसंयम और समर्पण का प्रतीक है। जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते हैं, उनका मन सांसारिक चिंताओं से मुक्त होता जाता है और वे एक आध्यात्मिक अनुभव के करीब पहुंचते जाते हैं।

पालीताणा की एक और विशेष पहचान है—यह दुनिया का पहला कानूनी रूप से शाकाहारी शहर है। वर्ष 2014 में यहां जैन मुनियों के प्रयासों से मांसाहार, अंडे और पशु हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया। यह निर्णय केवल एक प्रशासनिक कदम नहीं था, बल्कि यह जैन धर्म के मूल सिद्धांत 'अहिंसा परमो धर्मः' का जीवंत उदाहरण है। यहां का हर निवासी और आगंतुक इस नियम का पालन करता है, जिससे पूरे शहर में करुणा और संवेदनशीलता का वातावरण बना रहता है।

पालीताणा के नियम भी इसकी पवित्रता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सूर्यास्त के बाद पर्वत पर किसी भी मनुष्य को रुकने की अनुमति नहीं है। मान्यता है कि रात के समय यह स्थान देवताओं का निवास बन जाता है। इस नियम का पालन सख्ती से किया जाता है, जिससे इस तीर्थ की पवित्रता अक्षुण्ण बनी रहती है।

यहां का वातावरण केवल धार्मिक नहीं, बल्कि अत्यंत अनुशासित और संतुलित है। हर व्यक्ति यहां आकर अपने भीतर की अशांति को त्यागने और आत्मा के साथ जुड़ने का प्रयास करता है। यह स्थान हमें सिखाता है कि जीवन में सच्ची शांति बाहरी भौतिक वस्तुओं से नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन और आत्मिक ज्ञान से प्राप्त होती है।

पालीताणा की यह महागाथा हमें यह भी बताती है कि कला और अध्यात्म एक-दूसरे के पूरक हैं। यहां के मंदिरों की नक्काशी केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि यह एक आध्यात्मिक अभिव्यक्ति है। हर मूर्ति, हर स्तंभ और हर आकृति एक गहरे दार्शनिक संदेश को दर्शाती है। यह कला केवल देखने के लिए नहीं, बल्कि समझने और अनुभव करने के लिए है।

अंततः, पालीताणा केवल एक तीर्थ स्थल नहीं, बल्कि एक अनुभव है—एक ऐसी यात्रा जो शरीर से शुरू होकर आत्मा तक पहुंचती है। यह हमें यह सिखाता है कि जब मनुष्य अपने भीतर की जिज्ञासा, श्रद्धा और अनुशासन को जागृत करता है, तब वह न केवल अपने जीवन को बदल सकता है, बल्कि वह पूरे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बन सकता है।

शत्रुंजय पर्वत की ऊंचाइयों पर स्थित यह पवित्र धाम आज भी लाखों श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां आने वाला हर व्यक्ति कुछ न कुछ लेकर लौटता है—कोई शांति, कोई प्रेरणा और कोई आत्मिक संतोष। यही पालीताणा की सबसे बड़ी विशेषता है, और यही इसे विश्व के सबसे अद्वितीय आध्यात्मिक स्थलों में से एक बनाती है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

गुजरात के खिलाड़ियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करती है जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल योजना

जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल में खिलाड़ियों को निःशुल्क शिक्षा के साथ-साथ खेल का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है, राज्य सरकार प्रति खिलाड़ी सालाना 1.68 लाख रुपए का अनुमानित खर्च करती है

- गुजरात में 39 जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल संचालित, अब तक 12,000 से अधिक खिलाड़ियों ने उठाया लाभ
- डांग की ओपिनाबेन भिलार जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल से वर्ल्ड कप तक पहुंचीं, आज खो-खो कोच के रूप में दे रही हैं सेवाएं
- अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित प्रतिभाशाली निशानेबाज इलावेनिल वालरीवन के लिए जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल योजना बनी टर्निंग पॉइंट

जीएनएस)। गांधीनगर : अनुशासन, खेल भावना और टीम वर्क- ये ऐसे मूल्य हैं, जो कोई पाठ्यपुस्तक नहीं, बल्कि खेल का मैदान सिखाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, जो दृढ़तापूर्वक यह मानते हैं कि खेल व्यक्ति के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है, ने गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल (डीएलएसएस) योजना शुरू की थी। आज, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में यह योजना प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को निःशुल्क शिक्षा के साथ-साथ खेल का प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी प्रतिभा को तराशने में अहम भूमिका निभा रही है।

राज्य के खिलाड़ियों को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करता है डीएलएसएस

खेल, युवा और सांस्कृतिक गतिविधियां विभाग के अधीन कार्यरत गुजरात खेल प्राधिकरण (एसएजी) ने खेल प्रशिक्षण और स्कूली शिक्षा के दोहरे लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वर्ष 2013-14 में जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल योजना शुरू की थी। टैलेंट आइडेंटिफिकेशन (प्रतिभा खोज) की प्रक्रिया के अंतर्गत खिलाड़ियों का चयन दो श्रेणियों में किया जाता है, एक यंग टैलेंट और दूसरा प्रूवन टैलेंट (किसी खेल में उपलब्धि हासिल करने वाले)। चयनित खिलाड़ियों को निःशुल्क शिक्षा, पुस्तकें और स्टेशनरी, निवास, भोजन, स्कूल गणवेश, स्पोर्ट्स किट, गहन प्रशिक्षण और स्टाइपैंड जैसे लाभ दिए जाते हैं। डीएलएसएस योजना के अंतर्गत खिलाड़ियों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रशिक्षण दिया जाता है। राज्य से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार करने में जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल की भूमिका उल्लेखनीय रही है।

पिछले 2 वर्षों के दौरान राज्य स्तर पर आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में डीएलएसएस स्कूल के खिलाड़ियों ने कुल 3444 मेडल और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में कुल 335 मेडल जीते हैं। वहीं, अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में 4 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया और 1 कांस्य पदक जीता है।

गुजरात में 39 जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल संचालित, योजना के तहत 2025-26 में कुल 95.75 करोड़ रुपए खर्च किए गए

राज्य में जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल योजना की शुरुआत से लेकर अब तक 12,000 से अधिक खिलाड़ियों ने इसका लाभ उठाया है। वर्ष 2025-26 की स्थिति के अनुसार राज्य के 29 जिलों में 39 स्पोर्ट्स स्कूल संचालित हैं और 21 विभिन्न खेलों में 5300 से अधिक खिलाड़ी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल में खिलाड़ियों को विशेषज्ञ कोच, ट्रेनर और योग ट्रेनर द्वारा वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षण दिया जाता है, और खिलाड़ियों की फिटनेस एवं रिकवरी के लिए फिजियोथेरेपिस्ट भी उपलब्ध होते हैं। इस योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा प्रति खिलाड़ी सालाना 1.68 लाख रुपए का अनुमानित खर्च किया जाता है। वर्ष 2025-26 में इस योजना के अंतर्गत कुल 95.75 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं।

डीएलएसएस योजना मेरे करियर के लिए टर्निंग पॉइंट बनी : अर्जुन अवॉर्डी इलावेनिल वालरीवन

निशानेबाजी में गुजरात का प्रतिनिधित्व करने वाली और अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित इलावेनिल वालरीवन पूर्व डीएलएसएस खिलाड़ी हैं। इलावेनिल ने अहमदाबाद के साणंद में स्थित लक्ष्मण ज्ञानपीठ स्कूल में प्रशिक्षण प्राप्त किया है और आज राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच पर गुजरात का नाम रोशन कर रही हैं। जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल में प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त अपने अनुभवों को साझा करते हुए इलावेनिल वालरीवन ने कहा, "मैंने वर्ष 2014 से 2017 के दौरान साणंद के लक्ष्मण ज्ञानपीठ स्कूल में प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसने एक निशानेबाज के तौर पर मेरी प्रतिभा को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहां मिली आधुनिक सुविधाओं, स्पोर्ट्स इक्विपमेंट्स, विशेषज्ञ कोचिंग और निशानेबाजी के लिए उपलब्ध रेंज सेटअप से मुझे काफी मदद मिली। जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल योजना मेरे करियर के लिए एक टर्निंग पॉइंट सिद्ध हुई।"

उल्लेखनीय है कि इलावेनिल ने 2025 की एशियन चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक, 2025 वर्ल्ड चैंपियनशिप में कांस्य पदक, 2024 के रियो डी जेनेरियो वर्ल्ड कप में स्वर्ण पदक और 2024 की जकार्ता एशियन चैंपियनशिप में रजत पदक जीता है। इसके अलावा, उन्होंने टोक्यो ओलंपिक 2020 और पेरिस ओलंपिक 2024 में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

डीएलएसएस योजना की लाभार्थी डांग की ओपिनाबेन ने खो-खो विश्व कप में दिखाया कमाल

डांग जिले के बिलीआंबा गांव की रहने वाली और खो-खो खिलाड़ी ओपिनाबेन देवजीभाई भिलार भी जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल (डीएलएसएस) की खिलाड़ी रह चुकी हैं। उन्होंने खो-खो विश्व कप 2025 (भारत) में स्वर्ण पदक, 56वीं सीनियर नेशनल खो-खो चैंपियनशिप 2024 दिल्ली में स्वर्ण पदक और प्रथम जनजातीय खेल महोत्सव ओडिशा 2023-24 में रजत पदक जीता है। वे 55वीं सीनियर राष्ट्रीय खो-खो चैंपियनशिप 2023 (महाराष्ट्र) तथा गोवा में 2023 में आयोजित में 37वें राष्ट्रीय खेलों में खो-खो चैंपियनशिप में भी हिस्सा ले चुकी हैं।

डांग से लेकर विश्व कप तक का सफर तय करने वाली ओपिनाबेन कहती हैं, "राज्य स्तर की खो-खो प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के बाद मेरे शिक्षक ने मुझे जिला स्तरीय स्पोर्ट्स स्कूल (डीएलएसएस) योजना की जानकारी दी और उनके मार्गदर्शन से मैं वर्ष 2014 में डीएलएसएस से जुड़ गई। यहां मुझे विशेषज्ञ कोच द्वारा सुबह-शाम गहन प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। इसके बाद मुझे वर्ष 2015 और 2016 के दौरान वडोदरा की एथलेटिक्स एकेडमी में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला। राज्य सरकार की डीएलएसएस जैसी योजना के कारण ही मैं खो-खो के खेल में आगे बढ़ पाई और विश्व कप तक पहुंचने का मौका मिला। आज मैं पंचमहाल जिले में कोच के रूप में काम कर रही हूं और उभरते खिलाड़ियों को मार्गदर्शन दे रही हूं।"

भावनगर के सवारी डिब्बा मरम्मत कारखाना में राजभाषा संबंधी निरीक्षण और हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 31-03-2026 को भावनगर परा स्थित पश्चिम रेलवे के सवारी डिब्बा मरम्मत कारखाना का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया। इस दौरान मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री राकेश कुमार खराड़ी के आदेशानुसार राजभाषा हिंदी से जुड़े नियमों की जानकारी देने के उद्देश्य से एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। कारखाने के सभी अधिकारियों – कर्मचारियों ने कार्यशाला में हिस्सा लेकर अधिकाधिक कार्य राजभाषा हिंदी में करने के अपने संकल्प को दोहराया।

पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग की वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्रीमती सुनीता अहिरे ने दिनांक 31-03-2026 को भावनगर परा स्थित सवारी डिब्बा मरम्मत कारखाना में राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। गौरतलब है कि राजभाषा अधिनियम 1963 के अनुसार केंद्र सरकार के देशभर में स्थित कार्यालयों में संपूर्ण सरकारी कामकाज हिंदी में किया जाना चाहिए। इसी अधिनियम का समुचित अनुपालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे के राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जाता है।

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्रीमती सुनीता अहिरे ने भावनगर कारखाने के विभिन्न अनुभागों में जाकर सरकारी कामकाज से जुड़ी भौतिक और ई-ऑफ़िस फ़ाइलों का निरीक्षण किया और राजभाषा से जुड़े नियमों के समुचित अनुपालन पर संतुष्टि व्यक्त की। उन्होंने खुशी ज़ाहिर करते हुए कहा कि यह हर्ष का विषय है कि भावनगर कारखाना के कर्मचारी राजभाषा नियमों के प्रति जागरूक हैं और अपना सरकारी कामकाज हिंदी में कर रहे हैं। इस अवसर पर श्रीमती अहिरे ने कहा कि हम जानते हैं कि भारत के अधिकांश नागरिक हिंदी बोलते और समझते हैं और इनकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। यह हम सभी का संवैधानिक दायित्व है कि हम सरकारी कामकाज हिंदी में करें, ताकि आमजन से संवाद को सरल, पारदर्शी और समावेशी बनाया जा सके, जिससे वे सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ बिना किसी बाधा के उठा सकें। यह कदम राजभाषा अधिनियम, 1963 और राजभाषा नियम, 1976 के तहत हमारी संवैधानिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। संसदीय राजभाषा समिति द्वारा जारी आदेशानुसार संपूर्ण सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में किया जाना अपेक्षित है और समिति अपने निरीक्षणों के दौरान इन बातों पर कड़ी निगरानी रखती है। उन्होंने कर्मचारियों से अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में करने को कहा और राजभाषा नियमों के बेहतर अनुपालन हेतु महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए।

इस अवसर पर मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री राकेश कुमार खराड़ी के आदेशानुसार राजभाषा कार्यशाला का भी आयोजन किया गया, ताकि कारखाने के सभी अधिकारी-कर्मचारी राजभाषा नियमों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर सकें। इस कार्यशाला में वराधि श्रीमती सुनीता अहिरे ने राजभाषा नियमों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उक्त कार्यशाला में कारखाने के 50 से अधिक अधिकारियों-कर्मचारियों ने भाग लिया।

अंत में वरिष्ठ सहायक वित्त सलाहकार एवं संपर्क राजभाषा अधिकारी श्री रत्नेश कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि राजभाषा कार्यशाला के माध्यम से हमें राजभाषा नियमों को विस्तार से समझने का अवसर प्राप्त हुआ है। भावनगर कारखाना राजभाषा नियमों के अनुपालन हेतु हमेशा प्रतिबद्ध है।

पश्चिम रेलवे द्वारा रचे नए कीर्तिमान, स्थापित किए नए मानक

माल ढुलाई, अवसंरचना, संरक्षा, सतत विकास एवं यात्री सेवाओं में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज

जीएनएस)। भारतीय रेल में विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी रहने वाली पश्चिम रेलवे ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान एक बार फिर उत्कृष्ट सर्वांगीण प्रदर्शन दर्ज किया है। इस अवधि में पश्चिम रेलवे ने माल ढुलाई, अवसंरचना उन्नयन, संरक्षा कार्य, उपनगरीय सेवाओं के सुदृढ़ीकरण, यात्री सुविधाओं तथा राजस्व सृजन जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। ये उपलब्धियाँ जोन के सभी विभागों के निरंतर प्रयासों तथा सुरक्षित, कुशल एवं यात्री-केंद्रित रेल संचालन के प्रति पश्चिम रेलवे की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

अवसंरचना विकास

- वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान 252 किमी नई लाइन, गेज परिवर्तन एवं दोहरीकरण कार्य पूर्ण किया गया।
- 206 रूट किलोमीटर (RKM) विद्युतीकरण कार्य पूरा किया गया। इसके साथ ही पश्चिम रेलवे का 100% ब्रॉड गेज नेटवर्क विद्युतीकृत हो गया है।
- पश्चिम रेलवे ने अत्याधुनिक सुरक्षा तकनीक कवच (संस्करण 4.0) की स्थापना पूर्ण की। वित्तीय वर्ष 2025-26 में 660 RKM पर कवच तकनीक स्थापित की गई।
- वर्ष 2025-26 में पश्चिम रेलवे पर 162 रोड ओवर ब्रिज/अंडर ब्रिज (ROB/RUB) का निर्माण किया गया, जो भारतीय रेल में सर्वाधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2025-26 में 20 फुट ओवर ब्रिज (FOB) का निर्माण किया गया।
- वित्तीय वर्ष 2025-26 में 100 मानवयुक्त समपार फाटकों का उन्मूलन किया गया।
- मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों की लगभग 96% समयपालनता के साथ पश्चिम रेलवे पूरे भारतीय रेल में शीर्ष स्थान पर रहा।
- 19 स्थायी गति प्रतिबंध (PSR) हटाए गए।
- रोलिंग स्टॉक वर्कशॉप, दाहोद से भारत का पहला 9000 हॉर्स पावर विद्युत इंजन तैयार किया गया।
- पश्चिम रेलवे ने मिशन रफ्तार के अंतर्गत रतलाम मंडल के खाचरौद–नागदा खंड पर भारत का पहला 2×25 केवी ट्रैक्शन सब-स्टेशन सफलतापूर्वक कमीशन किया, जो रेल विद्युतीकरण एवं उच्च गति संचालन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

पश्चिम रेलवे पर अहमदाबाद मंडल प्रथम स्थान पर

51.13 मिलियन टन माल लदान के साथ अहमदाबाद मंडल ने भारतीय रेल में अर्जित किया 8वाँ स्थान

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश के नेतृत्व में वर्ष 2025-26 के दौरान परिचालन दक्षता, माल एवं यात्री परिवहन, राजस्व सुदृढ़ीकरण तथा अवसंरचना विकास के सभी प्रमुख आयामों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित करते हुए उत्कृष्ट एवं संतुलित प्रदर्शन किया है।

वर्ष 2025-26 की प्रमुख उपलब्धियाँ—

- 9193 करोड़ की कुल आय अर्जित की गई, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 538 करोड़ से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई।
- 6867 करोड़ का माल राजस्व अर्जित किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 5.76% की वृद्धि दर्ज की गई।
- 1814 करोड़ का कोचिंग राजस्व अर्जित किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 6.89% की वृद्धि दर्ज की गई।
- 51.13 मिलियन टन माल लदान किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 9.30% की वृद्धि दर्ज की गई, जिसके परिणामस्वरूप अहमदाबाद मंडल ने भारतीय रेल में 8वाँ तथा पश्चिम रेलवे में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- वर्ष 2025-26 में 10 स्थायी गति प्रतिबंध (Permanent Speed Restriction) समाप्त किए गए।
- 26 रोड अंडर ब्रिज (RUB) एवं 04 रोड ओवर ब्रिज (ROB) का निर्माण किया गया, जिससे संरक्षा एवं यातायात सुगमता में वृद्धि हुई।
- 163 किमी नई रेलवे लाइन जोड़ी गई।
- 237 ट्रैक किमी में ट्रैक्शन कार्य पूर्ण किया गया।
- 69 हाई मास्ट टॉवर स्थापित किए गए।
- 4000 रेक्स का परीक्षण किया गया, जिससे माल लदान में वृद्धि दर्ज की गई।
- कुल 17 हजार कर्मचारियों में से 2520 कर्मचारियों (लगभग 14%) को पदोन्नति प्रदान की गई, जो कर्मचारी विकास में वृद्धि को दर्शाता है।

माल लदान में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

- 6,04,922 वैगनों का कंटेनर लदान किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 4.06% की वृद्धि दर्ज की गई।
- 1,76,794 वैगनों का उर्वरक लदान किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 24.61% की वृद्धि दर्ज की गई।
- 1,19,948 वैगनों का नमक लदान किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 27.85% की वृद्धि दर्ज की गई।
- ऑटोमोबाइल के लोडिंग में अहमदाबाद मण्डल अग्रेसर रहा है, 42,818 वैगनों का लदान किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 11.61% की वृद्धि दर्ज की गई।
- 413 एलपीजी रेक्स का लदान किया गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में सर्वाधिक है।

परिचालन प्रदर्शन में निरंतर सुधार

- औसतन 2893.9 वैगन प्रतिदिन लोडिंग की गई, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 6.77% की वृद्धि दर्ज की गई।
- कुल 72,014 कोचिंग ट्रेनें संचालित की गईं, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 4.91% की वृद्धि दर्ज की गई।
- कुल 24,748 रेक्स लोड किए गए, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 6.64% की वृद्धि दर्ज की गई।
- अहमदाबाद क्षेत्र में 7,049 रेक्स का संचालन किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 3.00% की वृद्धि दर्ज की गई।
- औसतन 206.20 ट्रेन प्रतिदिन इंटरचेंज किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 6.21% की वृद्धि दर्ज की गई।

राजस्व एवं यात्री सेवाओं में सुदृढ़ प्रगति

- 1450.67 करोड़ का गैर-भाड़ा राजस्व अर्जित किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 35.83% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।
- 322.82 करोड़ का स्टेशन पार्किंग राजस्व अर्जित किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 32.59% की वृद्धि दर्ज की गई।
- 31.66 करोड़ का टिकट जांच राजस्व अर्जित किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 44.04% की वृद्धि दर्ज की गई।
- 22.36 करोड़ का अन्य विविध राजस्व अर्जित किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 22.03% की वृद्धि दर्ज की गई।
- 12.52 करोड़ का स्वच्छता दंड अर्जित किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 184.55% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।
- 408.10 लाख यात्रियों का परिवहन किया गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 10.16% की वृद्धि दर्ज की गई।

नई रेल सेवाएँ

- 26 मई 2025 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा वेरावल–साबरमती वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई गई।
- 25 अगस्त 2025 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा कड़ी–साबरमती–कटोसन रोड के मध्य मेमू सेवा का शुभारंभ किया गया तथा बेचराजी से कार-लोडेड मालगाड़ी को हरी झंडी दिखाई गई।
- 16 फरवरी 2026 से असारवा–उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस का संचालन प्रारंभ किया गया।
- 31 मार्च 2026 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा खेडब्रह्मा–हिम्मतनगर–अहमदाबाद (असारवा) नई रेल सेवा का शुभारंभ किया गया।

अवसंरचना विकास में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

- 22 मई 2025 को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा सामाखियाली स्टेशन का अमृत स्टेशन के रूप में उद्घाटन किया गया।
- साबरमती–बोटाद (106 किमी) रेल खंड का विद्युतीकरण पूर्ण कर गुजरात में 100% विद्युतीकरण सुनिश्चित किया गया।
- महेसाणा–पालनपुर (65.10 किमी) रेल खंड का दोहरीकरण कार्य पूर्ण किया गया।
- आंबलियासन–विजापुर–मोटी आदराज (82 किमी), कलोल–कडी–कटोसन रोड (38 किमी) तथा बेचराजी–रणुज (40 किमी) सहित विभिन्न रेल खंडों पर कार्य पूर्ण किया गया।
- 31 मार्च 2026 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा गांधीधाम–आदीपुर रेल लाइन के मल्टी-ट्रैकिंग कार्य को राष्ट्र को समर्पित किया गया।

सोना वायदा में 2281 रुपये और चांदी वायदा में 839 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा 293 रुपये लुढ़का

जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 119533.65 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 31081.69 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 88450.98 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का अप्रैल वायदा 36505 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3110.37 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 19448.07 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 149460 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 149601 रुपये और नीचे में 148550 रुपये पर पहुंचकर, 146919 रुपये के पिछले बंद के सामने 2281 रुपये या 1.55 फीसदी की तेजी के संग 149200 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी अप्रैल वायदा 1627 रुपये या 1.36 फीसदी की तेजी के संग 121621 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल अप्रैल वायदा 202 रुपये या 1.34 फीसदी की तेजी के संग 15238 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 148486 रुपये के भाव पर खूलकर, 149859 रुपये के दिन के उच्च और 148190 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 2159 रुपये या 1.46 फीसदी की तेजी के संग 149850 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन अप्रैल वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 150000 रुपये के भाव पर खूलकर, 151725 रुपये के दिन के उच्च और 149900 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 149605 रुपये के पिछले बंद के सामने 1975 रुपये या 1.32 फीसदी की तेजी के संग 151580 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा सत्र के आरंभ में 239257 रुपये के भाव पर खूलकर, 242498 रुपये के दिन के उच्च और 238501 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 240892 रुपये के पिछले बंद के सामने 839 रुपये या 0.35 फीसदी की बढ़त के साथ 241731 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 1113 रुपये या 0.46 फीसदी की तेजी के संग 244846 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 1125 रुपये या 0.46 फीसदी की बढ़त के साथ 245011 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

- कमोडिटी वायदाओं में 31081.69 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 88450.98 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 19448.07 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 36505 पॉइंट के स्तर पर

मेटल वर्ग में 2345.22 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा अप्रैल वायदा 1.7 रुपये या 0.15 फीसदी की बढ़त के साथ 1165.4 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि जस्ता अप्रैल वायदा 1.55 रुपये या 0.49 फीसदी की मजबूती के साथ 321 रुपये प्रति किलो बोला गया। इसके सामने एल्यूमीनियम अप्रैल वायदा 2.95 रुपये या 0.84 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 353.55 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा अप्रैल वायदा 10 पैसे या 0.05 फीसदी चढ़कर 195.2 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 9277.14 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल अप्रैल वायदा 9675 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 9844 रुपये और नीचे में 9029 रुपये पर पहुंचकर, 293 रुपये या 3.06 फीसदी गिरकर 9274 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी अप्रैल वायदा 291 रुपये या 3.04 फीसदी औंधकर 9272 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। इनके अलावा नैचुरल गैस अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 273 रुपये के भाव पर खूलकर, 275.5 रुपये के दिन के उच्च और 268.7 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 274.3 रुपये के पिछले बंद के सामने 5 रुपये या 1.82 फीसदी की गिरावट के साथ 269.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी अप्रैल वायदा 5 रुपये या 1.82 फीसदी गिरकर 269.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल अप्रैल वायदा 1050 रुपये पर खूलकर, 10 पैसे या 0.01 फीसदी टूटकर 1043.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 13476.96 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 5971.11 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1379.72 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 731.92 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 11.61 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 221.97 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 7926.53 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1312.80 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 7643 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 52139 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 26382 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 344815 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 52266 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 6988 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 18978 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 73176 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 20195 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 33318 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स अप्रैल वायदा 36001 पॉइंट पर खूलकर, 36505 के उच्च और 36001 के नीचले स्तर को छूकर, 614 पॉइंट बढ़कर 36505 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल अप्रैल 12000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 71.9 रुपये की गिरावट के साथ 168.6 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.05 रुपये की गिरावट के साथ 15.35 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 48.5 रुपये की गिरावट के साथ 202.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 163 रुपये की गिरावट के साथ 1686.5 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 27 पैसे की नरमी के साथ 18.5 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 325 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.64 रुपये की बढ़त के साथ 5.5 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल अप्रैल 8000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 38.5 रुपये की बढ़त के साथ 263.9 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.45 रुपये की बढ़त के साथ 16.65 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 120000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 367.5 रुपये की गिरावट के साथ 288 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 180000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 466.5 रुपये की गिरावट के साथ 1351 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 49 पैसे की नरमी के साथ 11.53 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 307.5 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 11 पैसे के सुधार के साथ 2 रुपये हुआ।

उपलब्धियों भरा वर्ष 2025-26

697 करोड़ रु से अधिक यात्री राजस्व अर्जित, 297 किलोमीटर कवच से लैस,ट्रेनों की पंक्चुअलिटी रही अव्वल,10 स्टेशन बने नेट जीरो स्टेशन

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल ने वित्तीय वर्ष 2025 -26 में परिचालन, यात्री सेवा,अवसंरचना, राजस्व एवं सुरक्षा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करते हुए नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। मंडल के विभिन्न विभागों के समन्वित प्रयासों ने इसे एक उत्कृष्ट प्रदर्शन वर्ष बनाया है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में वडोदरा मंडल ने ट्रेन परिचालन में ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल कीं। यात्री सुविधा हेतु वडोदरा–कठाना मेमू सेवा पुनः प्रारंभ की गई एवं मियागाम कर्जन -डभोई - प्रतापनगर डेमू का ट्रायल रन किया गया। ट्रेन संख्या 20945 एकतानगर–निजामुद्दीन एक्सप्रेस के समय एवं दिन यात्रियों की मांग के अनुसार परिवर्तित किए गए। प्रतापनगर को वडोदरा का सैटेलाइट स्टेशन के रूप में कमीशन किया गया। मंडल पर ट्रेनों की समयपालनता (पंचुअलिटी) पिछले 5 वर्षों में सबसे ज्यादा 91.14% रही, तो वहीं फ्रेट ट्रेन की औसत गति 23.89 किमी/घंटा रही, जो अब तक का सर्वाधिक है। माल ढुलाई में मंडल ने 13.46 मिलियन टन लोडिंग के साथ अपने लक्ष्य को हासिल किया।फर्टिलाइजर और कंटेनर लोडिंग में नए आयाम स्थापित किये गए और कंटेनर, कास्टिक सोडा और उर्वरकों की लोडिंग में वृद्धि दिखाई है। 31 मार्च को 33 रेक और 1397 वैगनों की एक दिन में सर्वाधिक लोडिंग दर्ज की गई। नबीपुर में नया गति शक्ति कार्गो टर्मिनल शुरू किया गया और वडोदरा मंडल पर पहली बार फ्रेट कस्टमर्स के लिए बिजनेस डेवलपमेंट कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया।

वर्ष 2025 -26 में मंडल ने 697.57 करोड़ का यात्री राजस्व अर्जित किया गया, जो अभी तक का सर्वाधिक है। इसके साथ ही संड्री, नॉन-फेयर एवं पार्किंग राजस्व में भी रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई। नॉन-फेयर रेवेन्यू के अंतर्गत 7.23 करोड़ रुपए अर्जित किए हैं, जो पिछले वर्ष की सामान अवधि की तुलना में 4.47% अधिक है। रेल मदद शिकायतों में 112% कमी तथा निस्तारण समय में 60% सुधार दर्ज किया गया।

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत 5 स्टेशनों का उद्घाटन किया गया, जो स्टेशन आधुनिकीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत गोधरा स्टेशन भी तैयार है। यात्री सुविधा हेतु डेरोल में 12 मीटर चौड़ा फुट ओवर ब्रिज यात्रियों के लिए उपलब्ध है तथा 8 अन्य 12 मीटर चौड़े फुट ओवर ब्रिज का कार्य प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त 6 मीटर चौड़े 4 अन्य फुट ओवर ब्रिज पूर्ण किए गए। 20 स्टेशनों पर प्लेटफॉर्मों को विस्तारित या उसकी ऊँचाई बढ़ाने के कार्य किये गए। हरित ऊर्जा की ओर कदम बढ़ाते हुए वित्त वर्ष 2025-26 में 2.722 MWp क्षमता के सोलर पैनल स्थापित किए, जिससे 3.64 मिलियन यूनिट वार्षिक ऊर्जा उत्पादन किया गया और लगभग 2.92 करोड़ की बचत हुई। इसके अतिरिक्त रूफ टॉप सोलर प्लांट लगाकर 10 स्टेशनों को नेट जीरो स्टेशन बनाया गया।

ट्रेन संचालन की सुरक्षा एवं विश्वसनीयता में सुधार हेतु 301.1 किमी पुराने एवं कमजोर ओवरहेड उपकरण (OHE) का प्रतिस्थापन किया गया।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल ने वित्तीय वर्ष 2025 -26 में 2362 वैगनों का रिकॉर्ड ROH आउटटर्न हासिल किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 58.35% अधिक है।

संरक्षा को मजबूत बनाते हुए 17 लेवल क्रॉसिंग को समाप्त किया गया, 5 रोड ओवर ब्रिज एवं 3 रोड अंडर ब्रिज का निर्माण किया गया तथा 15 पुलों का पुनर्वास किया गया।

297 किमी ट्रैक पर कवच प्रणाली स्थापित कर ट्रेन संरक्षा को और मजबूत किया गया, जिसमे 126 किलोमीटर उत्राण से वडोदरा, 96 किलोमीटर वडोदरा से अहमदाबाद और 76 किलोमीटर वडोदरा से गोधरा खंड शामिल है। कोसंबा, कुंधेला, डेकाकुंड एवं तिलकवाड़ा स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग की स्थापना की गयी। यात्री सुविधा के लिए विश्वामित्री, मियागाम करजन, डेरोल एवं डाकोर में कोच गाइडेंस सिस्टम स्थापित किए गए। साथ ही 42 स्टेशनों पर 679 CCTV कैमरे लगाए गए।

यात्रियों की सुरक्षा एवं सेवा के लिए हमारा रेल सुरक्षा बल हमेशा तत्पर है। रेल सुरक्षा बल द्वारा ट्रेस पासिंग के अभियान चलाकर अनधिकृत रूप से रेलवे लाइन को पार करने वाले लोगों के खिलाफ कुल 7901 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया , इससे ट्रेसपासिंग और रन ओवर के मामलों में कमी आई है। ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते के तहत 103 बच्चों को उनके परिवार से मिलाया गया, जबकि ऑपरेशन अमानत के तहत 1.73 करोड़ मूल्य की 1049 वस्तुएं यात्रियों को लौटाई गईं।

स्क्रैप निपटान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए मंडल ने 78.67 करोड़ का स्क्रैप विक्रय किया जो लक्ष्य से 31% अधिक है। यह उपलब्धि मिशन जीरो स्क्रैप के अंतर्गत वडोदरा मंडल की अपने सभी प्रतिष्ठानों एवं इकाइयों को स्क्रैप-मुक्त बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

वडोदरा मंडल की ये उपलब्धियां इसकी कार्यकुशलता, सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता, नवाचार एवं यात्री सेवा के उच्च मानकों को दर्शाती हैं। मंडल निरंतर प्रगति करते हुए भारतीय रेलवे में उत्कृष्टता के नए मानदंड स्थापित कर रहा है।

“भक्त शिरोमणि रामदूत हनुमान”

जीएनएस)। राम नाम के अनन्य प्रेमी भक्त शिरोमणि अंजनीसुत हनुमानजी की महिमा से भला कौन परिचित नहीं है। रामायण की कल्पना रामदूत हनुमान के बिना नहीं की जा सकती। भक्त और भक्ति की उत्कृष्टता को सिद्ध करने वाले हनुमानजी की लीला न्यारी है। श्रीराम दूत हनुमान भक्ति की उच्च पराकाष्ठा को सिद्ध करते है इसी कारण श्रीराम भी सदैव उनके साथ ही अपनी पूर्णता को प्रदर्शित करते है, इसीलिए उन्हें भक्त शिरोमणि की भी संज्ञा दी गई है। रामायण में हनुमानजी का नहीं श्रीराम दूत के नवीन रूप का अवतरण हुआ, जो हमें यह सिखाता है कि हम अपनी सेवा, भक्ति, कर्मों एवं प्रयासों से नवीन स्वरूप में संसार के समक्ष प्रत्यक्ष हो सकते है। महादेव के अंश रुद्रावतार ने श्रीराम के प्रति अनन्य भक्ति एवं प्रेम को हृदय में विराजमान किया। महादेव को भोलेनाथ कहा जाता है, यही गुण उनके रुद्रावतार हनुमानजी के स्वभाव में परिलक्षित होता है। वे भी प्रभु श्रीराम की प्रसन्नता के लिए पूरे शरीर पर सिंदूर धारण करते है।

जहाँ धन, पद और यश के लालच में व्यक्ति अपना सुख चैन, सर्वस्व त्याग देता है, वहीं हनुमानजी ने प्रभु श्रीराम के आग्रह पर उनके चरणपद ही माँग लिए और बाकी सबका सहज ही त्याग कर दिया। हनुमानजी की अनूठी विशेषता उनका अहंकार शून्य होना भी है। हनुमानजी की प्रतिभा संपन्नता तो हमें बाल्य रूप से ही दिखाई देने लगती है। भूख लगने पर सूर्य को फल समझकर खा लेना, उनकी अद्भुत शक्ति संपन्नता को प्रदर्शित करता है, परंतु अपने सम्बोधन में वे रामदूत के उच्चारण को ही प्राथमिकता देते है। हनुमानजी में यदि सेवा भाव एवं पूर्ण समर्पण था, तो वहीं श्रीराम भी हनुमान के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखते थे। ज्ञानियों में अग्रगण्य हनुमानजी की एक और विलक्षण विशेषता यह है कि वे अपना परिचय सदैव श्रीराम के दूत के रूप में देते है।

हनुमानजी इतने बुद्धिमान है कि उन्हें ज्ञात है कि कब उन्हें लघु रूप धारण करना है और कब वृहद रूप धारण करके श्रीराम के कार्यो को शीघ्रता से सम्पन्न करना है। हमें सदैव अपने कार्य के प्रति उत्साह का भाव दिखाना चाहिए। जब श्रीराम के कार्य को पूरा करने के लिए हनुमान समुद्र पार करने गए तो वे अत्यंत उत्साहित थे और लक्ष्य के प्रति दृढ़निष्ठ थे। जब मैनाक पर्वत ने उन्हें रुकने को कहा तो उन्होने कहा मुझे शीघ्रता से माता सीता का पता लगाना है और तत्परता से श्रीराम का कार्य करना है। कार्यों को प्राथमिकता देना भी हमें हनुमानजी से सीखना चाहिए।

श्रीराम दूत हनुमान के जीवन में भक्ति और शक्ति का अनूठा समन्वय दृष्टिगोचर होता है। रामायण का प्रत्येक चरित्र अद्भुत है, परंतु रामायण के प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य को पूर्णता हनुमानजी ने दी। समुद्र लाँघना हो, माता सीता का पता लगाना हो, लंका दहन करना हो या लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा करनी हो, यह सभी कार्य हनुमानजी के द्वारा पूर्णता को प्राप्त हुए; फिर भी वे प्रत्येक कार्य की सफलता का श्रेय श्रीराम को देते है। हनुमानजी के गुण स्वरूप कार्यों एवं आदर्शों के अनुरूप ही उनके बारह नाम है, जो मनुष्य को अदम्य साहस और ऊर्जा प्रदान करते है। हनुमान, अंजनीसुत, वायुपुत्र, महाबल, रामेष्ठ, फाल्गुनसखा, पिङ्गाक्ष, अमितविक्रम, सीताशोकविनाशन, लक्ष्मण प्राणदाता, दशग्रीवदर्पहा इन सभी नामों को स्मरण करने से जीवन के पाप और संताप नष्ट होते है। कलयुग में हनुमान चालीसा और सुंदरकाण्ड तो हनुमानजी की कृपा प्राप्ति के लिए भक्तो के अमोघ शस्त्र है। हनुमान चालीसा की उत्कृष्टता तो इस बात में निहित है कि स्वयं गौरी के ईश महादेव उसके साक्षी बनते है। हनुमान चालीसा भी हममे अदम्य शक्ति, साहस, भक्ति एवं ऊर्जा का अंकुरण करती है।

श्रीरामकथा श्रवण के प्रेमी हनुमानजी सदैव श्रीराम के नाम स्वरूप एवं गुणों का दर्शन करते है। यदि हम जीवन के उपवन में भक्ति एवं प्रसन्नता के प्रसून को पल्लवित और पुष्पित करना चाहते है तो असाध्य कार्य को भी साध्य करने वाले रामभक्त हनुमान की शरण ग्रहण कर लेना चाहिए। अद्वितीय भक्ति की प्रतीक माता सीता ने उन्हें अष्ट सिद्धि और नव निधि का आशीष दिया है। हनुमानजी की विलक्षण लीला हमें शिक्षा देती है कि व्यक्ति के जीवन में कर्म ही प्रधान होते है। उन्हीं कर्मो की वजह से हनुमानजी श्रीराम को भरत एवं लक्ष्मण के समान प्रिय हुए। हनुमानजी की आत्मा की सुंदरता तो माता जानकी और श्रीराम के उनके हृदय में विराजमान होने से है।

भक्त शिरोमणि हनुमान भगवान और भक्ति सब कुछ प्रदान करने का सामर्थ्य रखते है। संसार के प्रत्येक दुर्गम कार्य को सुगमता से करने की क्षमता हनुमानजी में है। श्रीराम दूत के सम्बोधन से तो वे अति प्रसन्न हो जाते है और भक्त पर अपनी विशेष कृपा करते है। स्वयं उत्तम चरित्र से शोभायमान हनुमानजी हमेशा श्रीराम के चरित्र को सुनने के लिए लालायित रहते है। समस्त सद्गुणों के स्वामी हनुमानजी संकट मोचक है।

हनुमान जन्मोत्सव जैसे उत्सव हममे भक्ति की अनूठी ऊर्जा का संचार करते है। अक्सर सांसरिक मोहमाया से भगवान की स्मृति खो देते है, परंतु प्रत्येक उत्सव हममे भगवान की स्मृति को जीवंत करता है। महाभारत में जब कुंती ने श्रीकृष्ण से दुःख मांगा तब श्रीकृष्ण ने कहा की आपका पूरा जीवन अथक संघर्षों में व्यतीत हुआ इसके पश्चात भी आप दुःख माँग रही है। तब उन्होने गोविंद को उत्तर दिया की दुःख में सदैव आपकी स्मृति बनी रहती है। इसी प्रकार यह छोटे-छोटे उत्सव हमें भगवान के नाम रूपी बैंक में निवेश करने को प्रेरित करते है, जोकि मनुष्ययोनि की सच्ची कमाई है। तो आइये उन्हीं श्रेष्ठ भक्त शिरोमणि हनुमानजी के जन्मोत्सव को पूर्ण हर्षो-उल्लास से मनाए। भक्ति में भाव की प्रधानता होती है। प्रभु कभी भी पूजा के मापदंड एवं भक्ति के क्रियाकलाप नहीं देखते। राम कीर्तन भी हनुमानजी को अत्यंत प्रिय है। चारों युग में अपनी कीर्ति को प्रतिष्ठित करने वाले हनुमानजी कलयुग में राम कथा होने पर यत्र-तत्र विराजमान होते है, तो हम श्रीराम नाम के उद्घोष के साथ सहज ही राम भक्त हनुमान की कृपा को प्राप्त कर सकते है।

यात्रियों की सुविधा हेतु भावनगर रेलवे मंडल के मीटर गेज सेक्शन में चल रही हैं 8 ट्रेनें

जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा एवं बेहतर रेल सेवाओं के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा मीटर गेज (MG) सेक्शन में 8 ट्रेनों का नियमित संचालन किया जा रहा है। पश्चिम रेलवे यात्रियों से अपील करता है कि वे इन ट्रेन सेवाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाएं और सुरक्षित एवं आरामदायक यात्रा का अनुभव प्राप्त करें।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, मीटर गेज सेक्शन में संचालित ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है—

1. ट्रेन संख्या 52949 वेरावल-देलवाडा मीटरगेज ट्रेन वेरावल स्टेशन से दोपहर 14.00 बजे प्रस्थान कर 17.50 बजे देलवाडा स्टेशन पहुंचती है।
2. ट्रेन संख्या 52955 वेरावल-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन वेरावल स्टेशन से सुबह 06.15 बजे प्रस्थान कर 10.25 बजे जूनागढ़ पहुंचती है।
3. ट्रेन संख्या 52946 जूनागढ़-वेरावल मीटरगेज ट्रेन जूनागढ़ स्टेशन से सुबह 06.15 बजे प्रस्थान कर 10.25 बजे वेरावल पहुंचती है।
4. ट्रेन संख्या 52952 जूनागढ़-देलवाडा मीटरगेज ट्रेन जूनागढ़ स्टेशन से सुबह 08.00 बजे प्रस्थान कर दोपहर 14.40 बजे देलवाडा पहुंचती है।
5. ट्रेन संख्या 09595 जूनागढ़-चलाला मीटरगेज स्पेशल ट्रेन जूनागढ़ स्टेशन से सुबह 10.40 बजे प्रस्थान कर दोपहर 14.10 बजे चलाला पहुंचती है।
6. ट्रेन संख्या 52950 देलवाडा-वेरावल मीटरगेज ट्रेन देलवाडा स्टेशन से सुबह 07.50 बजे प्रस्थान कर 11.20 बजे वेरावल पहुंचती है।
7. ट्रेन संख्या 52951 देलवाडा-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन देलवाडा स्टेशन से सुबह 11.00 बजे प्रस्थान कर 18.10 बजे जूनागढ़ पहुंचती है।
8. ट्रेन संख्या 09596 चलाला-जूनागढ़ मीटरगेज स्पेशल ट्रेन चलाला स्टेशन से दोपहर 14.40 बजे प्रस्थान कर शाम 17.35 बजे जूनागढ़ पहुंचती है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि यात्रियों को इन सेवाओं का अधिकतम लाभ उठाना चाहिए। ट्रेनों की समय-सारिणी का विस्तृत विवरण संबंधित स्टेशनों पर प्रदर्शित किया गया है तथा रेलवे के अधिकृत माध्यमों से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

भावनगर रेलवे मंडल ने विविध राजस्व में 29.51 करोड़ की आय अर्जित की,पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 11.6% की वृद्धि

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा विविध राजस्व (Sundry Earnings) सृजन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान विविध राजस्व के रूप में 29.51 करोड़ की आय दर्ज किया गया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 11.6% की सुदृढ़ वृद्धि को दर्शाती है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार विविध राजस्व में मुख्य परिवहन सेवाओं के अतिरिक्त स्रोतों से प्राप्त आय शामिल होती है। भावनगर मंडल का यह उत्कृष्ट प्रदर्शन राजस्व स्रोतों के विविधीकरण, परिसंपत्तियों के सर्वोत्तम उपयोग तथा गैर-किराया आय के साधनों को सुदृढ़ करने पर निरंतर फोकस को दर्शाता है। इस राजस्व में प्रमुख योगदान प्रॉपर्टी डेवलपमेंट, भूमि एवं भवन किराया, वे-लीव शुल्क, साइडिंग रखरखाव शुल्क, विज्ञापन, पार्किंग तथा कैटरिंग से प्राप्त आय का है। अन्य महत्वपूर्ण स्रोतों में गैर-रेलवे निकायों से पुराने बकाया की वसूली, अनक्लेम्ड जमा राशि तथा दंड, जुर्माना, ब्याज, निरीक्षण शुल्क एवं अन्य विविध मदों से प्राप्त आय शामिल है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने बताया कि यह उपलब्धि विभिन्न विभागों के समन्वित एवं परिणाम-केंद्रित प्रयासों के माध्यम से गैर-किराया राजस्व आधार को मजबूत करने की भावनगर मंडल की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह रिकॉर्ड विविध राजस्व न केवल सुदृढ़ वित्तीय प्रबंधन का परिचायक है, बल्कि राजस्व सृजन के अभिनव उपायों की खोज तथा संसाधनों के इष्टतम उपयोग के प्रति मंडल के प्रयासों को भी मजबूती प्रदान करता है।

04 अप्रैल 2026 से ट्रेन संख्या 19821 असारवा–कोटा द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस के समय में आंशिक संशोधन

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा में वृद्धि तथा रेल संचालन को अधिक सुचारु एवं दक्ष बनाने के उद्देश्य से अहमदाबाद मंडल की ट्रेन संख्या 19821 असारवा–कोटा द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस (बुधवार एवं शनिवार) के समय में आंशिक संशोधन किया गया है। यह परिवर्तन दिनांक 04/04/2026 (शनिवार) से प्रभावी रहेगा।

जिसका विवरण निम्नानुसार है—

ट्रेन संख्या 19821 असारवा–कोटा द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस (बुधवार एवं शनिवार) दिनांक 04/04/2026 से असारवा स्टेशन से अपने निर्धारित समय 09:15 बजे के स्थान पर संशोधित समय 08:55 बजे प्रस्थान करेगी एवं सरदारग्राम स्टेशन पर निर्धारित समय 09:20/09:21 बजे के स्थान पर संशोधित समय 09:01/09:03 बजे आगमन/प्रस्थान करेगी तथा नांदोल देहेगाम स्टेशन पर निर्धारित समय 09:40/09:42 बजे के स्थान पर संशोधित समय 09:28/09:30 बजे आगमन/प्रस्थान करेगी।

ट्रेनों के ठहराव, समय एवं कोच संरचना की विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद के कैंप हनुमान मंदिर से हनुमानजी की भव्य शोभायात्रा को प्रस्थान कराया

- मुख्यमंत्री ने दादा के आशीर्वाद लिए और रथ का पूजन कर, राज्य के नागरिकों की समृद्धि और कल्याण के लिए प्रार्थना की
- गजराज, ऊंटगाड़ी, विशाल गदा, ट्रक के अलावा ‘ऑपरेशन सिंदूर’ का टेब्लो आकर्षण का केंद्र बना

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को अहमदाबाद के कैंप हनुमान मंदिर से भव्य शोभायात्रा को प्रस्थान कराया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने हनुमान दादा की पूजा-अर्चना की तथा राज्य के नागरिकों की समृद्धि और कल्याण के लिए प्रार्थना की।

अहमदाबाद के शाहीबाग स्थित कैंप हनुमान मंदिर ट्रस्ट द्वारा हर वर्ष की परंपरा के अनुसार भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। सुबह सामूहिक हनुमान चालीसा के पाठ के बाद इस यात्रा का प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने हनुमानजी के रथ की आरती उतारी और उसके बाद श्रीफल (नारियल) चढ़ाकर शोभायात्रा के मुख्य रथ को प्रस्थान कराया।

उल्लेखनीय है कि; शोभायात्रा में गजराज, ऊंटगाड़ी, विभिन्न ट्रक, ‘ऑपरेशन सिंदूर’ का टेब्लो, विशाल गदा, भजन मंडलियों के साथ बड़ी संख्या में भक्त जुड़े। यात्रा के मार्ग पर जगह-जगह रथयात्रा का स्वागत किया गया । इस अवसर पर कैंप हनुमान मंदिर के प्रमुख सुधीरभाई नाणावटी, एडीसी बैंक के अध्यक्ष अजयभाई पटेल, मंदिर के अन्य ट्रस्टी एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने देवका विद्यापीठ के नवनिर्मित कन्या छात्रावास और भोजनालय के अत्याधुनिक सुविधा युक्त भवन का लोकार्पण किया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- पूरे राज्य में साधारण और गरीब परिवार के बेटे-बेटियां पढ़-लिखकर आगे बढ़ सकें, इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था की है
- राज्य में ‘कन्या केळवणी महोत्सव’ के कारण बेटियों की स्कूल ड्रॉपआउट दर घटकर 2 फीसदी तक नीचे आ गई

- देवका विद्यापीठ में दानदाताओं के सहयोग से 1100 बेड का गर्ल्स हॉस्टल और 580 छात्राओं की क्षमता वाला अत्याधुनिक सुविधा युक्त भवन तैयार
- भागवत कथाकार पू. भाईश्री रमेशभाई ओझा, चापरड़ा गुरुकुल के संचालक श्री मुक्तानंद बापू, जल संसाधन मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल और राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया की विशेष उपस्थिति

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को अमरेली जिले की राजुला तहसील में स्थित देवका विद्यापीठ में नवनिर्मित अत्याधुनिक कन्या छात्रावास और भोजनालय के नए भवन का पट्टिका अनावरण कर लोकार्पण किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मुख्यमंत्रित्व काल के दौरान गुजरात में कन्या केळवणी (शिक्षा) की मजबूत नींव रखी थी। साधारण और गरीब परिवार के बेटे-बेटियां पढ़-लिखकर आगे बढ़ सकें, इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था की है।

शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केळवणी महोत्सव की सफल गाथा पर प्रकाश डालते हुए मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए कन्या केळवणी महोत्सव और शाला प्रवेशोत्सव के कारण बेटियों की ड्रॉपआउट दर घटकर 2 फीसदी तक नीचे आ गई है। राज्य सरकार ने ‘नमो लक्ष्मी’ और ‘नमो सरस्वती विज्ञान साधना’ योजनाएं शुरू की हैं, ताकि बेटियों को आर्थिक तंगी के कारण पढ़ाई अधूरी न छोड़नी पड़े। राज्य में अब तक नमो लक्ष्मी योजना के अंतर्गत 21.34 लाख बेटियों को 1438 करोड़ रुपए की सहायता का लाभ पहुंचाया गया है। इसके अलावा, नमो सरस्वती योजना के तहत 2.96 लाख छात्राओं को 220 करोड़ रुपए की सहायता सीधे उनके बैंक खातों में भेजी गई है।

मुख्यमंत्री ने शिक्षा क्षेत्र में राज्य सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को गेम चेंजर बताते हुए कहा कि गुजरात की बेटियां शिक्षा सहित खेल, स्टार्टअप, अनुसंधान और प्रशासन सहित सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं।

मुख्यमंत्री ने देवका विद्यापीठ में शिक्षा के साथ-साथ जीवन निर्माण, चरित्र निर्माण, गीता पाठ और संस्कार सिंचन जैसे राष्ट्रीय मूल्यों के निर्माण के शैक्षणिक यज्ञ की एक अद्वितीय और प्रशंसनीय कार्य के रूप में सराहना की और पू. भाईश्री रमेशभाई ओझा और देवका विद्याधाम को बधाई दी। देवका विद्यापीठ के प्रणेता और भागवद् कथाकार पू. भाईश्री रमेशभाई ओझा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि किसी भी राष्ट्र का भविष्य उस राष्ट्र के बालक होते हैं। हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था में कमजोर प्रदर्शन करने वाले बच्चों पर ध्यान केंद्रित कर उनकी प्रतिभा को निखारने का काम करने के लिए तैयार होना जरूरी है। शिक्षा ही विद्यार्थियों में क्षमताओं का निर्माण करती है।

पू. भाईश्री ने भारत की क्षमताओं को दुनिया की श्रेष्ठ क्षमताओं में से एक बताते हुए उसकी सराहना की और कहा कि भारत आज विश्व फलक पर अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

उल्लेखनीय है कि देवका विद्यापीठ का लोकार्पण वर्ष 2012 में तत्कालीन मुख्यमंत्री और मौजूदा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया था।

इस अवसर पर जल संसाधन मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल, राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया भी विशेष रूप से मौजूद रहे।

देवका विद्यापीठ गर्ल्स हॉस्टल और भोजनालय के नए भवन के लोकार्पण अवसर पर देवका विद्यापीठ के श्री सूर्यकांत ओझा, गौतमभाई ओझा सहित न्यासीगण, चापरड़ा गुरुकुल के संचालक श्री मुक्तानंद बापू, विधायक श्री हीराभाई सोलंकी, श्री महेशभाई कसवाला सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी और ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

दो दिवसीय वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय सम्मेलन (दक्षिण गुजरात एवं मध्य गुजरात) 1 मई से होगा प्रारंभ इस VGRC में कुल 16 जिले भाग लेंगे

जीएनएस)। गांधीनगर : माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और मार्गदर्शन तथा गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल के सक्षम नेतृत्व में दक्षिण एवं मध्य गुजरात क्षेत्रों के लिए वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय सम्मेलन (VGRC) का आयोजन 1 और 2 मई 2026 को सूरत में किया जाएगा।

VGRC का उद्देश्य क्षेत्रीय औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना, क्षेत्र-विशिष्ट निवेश आकर्षित करना और “विकसित भारत@2047” के दृष्टिकोण के अनुरूप वैश्विक सहभागिता को सुदृढ़ करना है। इन सम्मेलनों को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि स्थानीय उद्योगों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए उन्हें सशक्त किया जा सके तथा उन्हें व्यापक बाजार पहचान और साझेदारियाँ प्राप्त हों। ये क्षेत्रीय सम्मेलन न केवल क्षेत्रीय उपलब्धियों को प्रदर्शित करने और नई पहलों की घोषणा करने के मंच होंगे, बल्कि राज्यभर में नवाचार को प्रोत्साहित करने, क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं को सशक्त बनाने और रणनीतिक निवेश को बढ़ावा देने के माध्यम से गुजरात की विकास गाथा को आगे बढ़ाने का साधन भी बनेंगे।

VGRC के परिणामों को वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट के अगले संस्करण में प्रदर्शित किए जाने की अपेक्षा है।

इस VGRC के दौरान दक्षिण गुजरात क्षेत्र के भरूच, डांग, नवसारी, सूरत, तापी और वलसाड तथा मध्य गुजरात क्षेत्र के अहमदाबाद, आणंद, छोटा उदेपुर, दाहोद, गांधीनगर, खेड़ा, महिसागर, नर्मदा, पंचमहाल और वडोदरा जिलों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त, विभिन्न क्षेत्रों पर सेमिनार भी आयोजित किए जाएंगे, जिनमें केमिकल्स एवं पेट्रोकेमिकल्स, टेक्सटाइल्स एवं अपैरल्स, जेम्स एवं ज्वेलरी, फार्मास्यूटिकल्स, ग्रीन एनर्जी इकोसिस्टम, एग्रो एवं फूड प्रोसेसिंग, ESDM, IT एवं ITeS, बायोटेक/बायोफार्मा, एयरोस्पेस एवं डिफेंस, फिनटेक, ऑटो एवं ऑटो कंपोनेंट्स, स्किल डेवलपमेंट, स्टार्टअप्स, MSMEs तथा पर्यटन एवं संस्कृति शामिल हैं।

विशेष रूप से, यह VGRC गुजरात स्थापना दिवस के अवसर के साथ आयोजित हो रहा है। इस कार्यक्रम के साथ-साथ वाइब्रेंट गुजरात क्षेत्रीय प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें वेंडर डेवलपमेंट प्रोग्राम, इंटरनेशनल रिवर्स बायर-सेलर मीट और उद्यमी मेला जैसे कार्यक्रम शामिल होंगे।

उत्तर गुजरात क्षेत्र के लिए VGRC का आयोजन 9 और 10 अक्टूबर 2025 को मेहसाणा स्थित गणपत विश्वविद्यालय में किया गया था। इस सम्मेलन का उद्घाटन मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल द्वारा किया गया था, जिसमें उत्तर गुजरात के प्रमुख क्षेत्रों जैसे एग्रो एवं फूड प्रोसेसिंग, ऑटो एवं ऑटो कंपोनेंट्स, ग्रीन एनर्जी इकोसिस्टम और इंजीनियरिंग को प्रमुखता दी गई थी।

इस VGRC का उद्देश्य लक्षित निवेश आकर्षित करना और संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना था, जिससे गुजरात के जमीनी स्तर के उद्योगों को सशक्त किया जा सके।

उल्लेखनीय है कि इस वर्ष की शुरुआत में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कच्छ एवं सौराष्ट्र क्षेत्र के लिए VGRC का उद्घाटन किया था, जो 11 और 12 जनवरी 2026 को राजकोट स्थित मारवाड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ था। इस आयोजन में जापान, दक्षिण कोरिया, रवांडा और यूक्रेन साझेदार देशों के रूप में शामिल हुए थे। इस VGRC के प्रमुख क्षेत्रों में सिरेमिक्स, इंजीनियरिंग, पोर्ट्स एवं लॉजिस्टिक्स, फिशरीज, पेट्रोकेमिकल्स, एग्रो एवं फूड प्रोसेसिंग, मिनरल्स और ग्रीन एनर्जी इकोसिस्टम शामिल थे।